अमृत विचार

# लोक दर्पण

रविवार, 8 जून 2025 www.amritvichar.com

# आम ने बढ़ाया यूपी का मान

आम का नाम सुनते ही सभी के मुंह में पानी आ जाता है। शायद ही कोई ऐसा होगा, जिसको इस फलों के राजा का स्वाद पसंद न हो। गर्मी के मौसम में आने वाले इस फल का इंतजार सभी को साल भर रहता है। देश में आम का मुख्य उत्पादन उत्तर प्रदेश में होता है, जिसमें लखनऊ, उन्नाव और अमरोहा प्रमुख रूप से उत्पादन के केंद्र हैं। यहां से आम का निर्यात विदेशों को भी होता है। खाड़ी के देशों में आम की एक बड़ी खेप लखनऊ के मलिहाबाद और अमरोहा से निर्यात होती है। मलिहाबाद के दशहरी आम की डिमांड देश के साथ-साथ विदेश में भी खूब है। वहीं अमरोहा के चौसा, लंगड़ा, बंबइया और फजरी इंग्लैंड-जापान जैसे देशों में खूब पसंद किए जाते हैं।

प्रशांत सक्सेना, लखनऊ

यूं तो प्रदेश के 13 फलपट्टी जिलों में आम का सर्वाधिक उत्पादन होता है, लेकिन बात लखनऊ के 'मलिहाबादी दशहरी' की जाए तो दुनिया इसके स्वाद की कायल है। यहां का दशहरी अपने रंग, स्वाद, सुगंध और संरचना में विशेष पहचान बनाए हुए है। इसकी मिठास के आगे देशभर के दशहरी का स्वाद फीका है। मलिहाबादी दशहरी गूदेदार और ज्यादा मीठा होता है, जो देश-विदेश में खूब पसंद किया जाता है। जबकि उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों के अलावा बाहरी राज्यों में होने वाला दशहरी रेशेदार होता है और इसका स्वाद लोगों को कम पसंद है। खासकर उत्तर भारत में रेशेदार दशहरी की मांग नहीं है। यहां के लोगों की जुबां पर मलिहाबादी दशहरी ही मिठास घोले हुए है। मलिहाबाद के अलावा आम की बेल्ट माल और काकोरी ब्लॉक तक कुल 40 हजार हेक्टेयर में फैली हुई है। आम की उत्पादकता 18 टन प्रति हेक्टेयर है। मलिहाबाद से आम बाहरी देशों के अलावा दिल्ली, पंजाब, मुंबई, राजस्थान, गुजरात, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, जम्मू, मध्य प्रदेश आदि राज्यों की मंडियों में जाता है। जोकि मंडी परिषद अवध नाम से बिक्री करता है।

## खराब गुणवत्ता से गिरा निर्यात

आम का निर्यात लगातार खराब हो रही गुणवत्ता की वजह से गिरा है। खासकर अमेरिका व जापान जैसे देशों में आम का निर्यात तमाम कवायद के बाद भी शुरू नहीं हो पाया है। वजह यह भी है कि यह देश बिना गामा रेडिएशन की किरणों से उपचारित आम नहीं लेते हैं और प्रदेश में यह लैब नहीं थी। इन देशों में आम का निर्यात बढ़ाने के लिए लखनऊ में उद्यान विभाग और मंडी परिषद ने एक निजी कंपनी के माध्यम से इस सीजन गामा लैब संचालित कराई है। यहां से उपचारित आम की पहली खेप 10 जून से जापान जाएगी और बाद में अमेरिका के मानकों को पूरा करते हुए भेजा जाएगा। वहीं, मंडी परिषद के लखनऊ व सहारनपुर में संचालित मैंगो पैक हाउस से वेपर हीट ट्रीटमेंट करके आस्ट्रेलिया, रूस और जर्मन समेत खाड़ी देशों में आम निर्यात होता है। साथ ही मलिहाबाद से दशहरी, चौसा, लखनऊवा, लगड़ा आम प्रदेशों की मंडियों के साथ-साथ विदेश में भी जाता है।

## बैगिंग से चमकेगा आम निर्यात

उद्यान विभाग ने प्रदेश में गिरते आम की गुणवत्ता सुधार पर इस वर्ष राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के तहत बागवानों से बैगिंग यानी लिफाफे से फल को कवर करके तैयार किया है। इस विधि से फल में मौसम का विपरीत प्रभाव नहीं पड़ा है। गुणवत्ता के साथ पैदावार में इजाफा हुआ है। आम कीट-रोग रहित तैयार हुआ है। चमक व आकार भी बढ़ा है। मिठास भी पहले से अधिक है। बैगिंग में खर्च अधिक आता है और छोटे बागवान इससे फल तैयार नहीं कर पाते थे, लेकिन योजना के तहत 25 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर पाकर ज्यादातर बागवानों ने गुणवत्ता युक्त आम तैयार किया है। इसकी मांग बाहरी राज्यों से खूब आई है। मलिहाबाद मंडी में पहली खेप आने पर बैगिंग का आम 50 से 60 रुपये किलो थोक में बिका है। अतः यह पहले से ज्यादा निर्यात किया जाएगा।

## जीआई टैग से विशिष्टता की पहचान

मलिहाबादी दशहरी को अपनी विशिष्टता पर 1.25 जीआई टैग मिला है। इससे पहचान बहुत आसान है। इरादा फाउंडेशन और अवध आम उत्पादक सहकारी समिति समेत 60 व्यापारी व बागवान जीआई टैग के उपभोक्ता हैं, जो अपनी दशहरी को जीआई टैग लगाकर देश-विदेश में बिक्री करते हैं। क्योंकि कई जिलों व राज्यों में होने वाला दशहरी व्यापारी मलिहाबादी दशहरी बताकर बेचते हैं और खाने वाले इसकी पहचान नहीं कर पाते हैं। इसलिए मलिहाबादी दशहरी की पहचान के लिए जीआई टैग दिया गया है। इसके अलावा रटौल आम जो बागपत और बनारसी लंगड़ा आम जो पूर्वी उत्तर प्रदेश में होता है, उसको भी जीआई टैग मिला है।

## उत्पादन के मुकाबले निर्यात में पीछे

देश में आम उत्पादन की बात की जाए तो उत्तर प्रदेश सबसे आगे है। यहां के मुख्य फल पट्टी के जिले खराब गुणवत्ता, सुविधा व अन्य संसाधनों के अभाव में निर्यात करने में पीछे है। जबकि महाराष्ट्र आम के निर्यात में आगे है। महाराष्ट्र की मुख्य आम की प्रजाति केसर और अल्फांसो का सबसे ज्यादा बाहरी देशों में निर्यात होता है। जबकि उत्तर प्रदेश के आम की मिठास के आगे यह फीका है। वहीं, बिहार का लंगड़ा और चौसा भी जीआई टैग मिलने से पहचान बनाए हुए है।

मलिहाबाद दशहरी की विशिष्ट पहचान है, जो देश-विदेश में अपने रंग, स्वाद, सुगंध और संरचना से जाना जाता है। गुणवत्ता सुधार पर सरकार की योजना के अनुसार इस वर्ष काम किया है। इससे आम की गुणवत्ता और पैदावार बढ़ी है। इससे निर्यात को रफ्तार मिलेगी और बागवानों को उनकी मेहनत के अच्छे दाम मिलेंगे।

- डॉ. डीके वर्मा
उपनिदेशक, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण विभाग लखनऊ मंडल।

## 'ऑपरेशन सिंदूर' से नई प्रजाति को दिया 'राजनाथ' नाम

मलिहाबाद में करीब 85 वर्षीय हाजी कलीम उल्लाह खान प्रगतिशील बागवान हैं। उन्होंने एक पेड़ में 300 से अधिक आम की नई प्रजाति विकसित करके नामकरण किया है। इस वर्ष उन्होंने एक और आम की प्रजाति विकसित की है, जिसका नाम 'ऑपरेशन सिंदूर' से जोड़ते हुए रक्षामंत्री राजनाथ सिंह के नाम पर रख दिया है। इसके अलावा वह अन्य प्रजाति विकसित करके मोदी, योगी, अमित शाह, मुलायम सिंह यादव, अखिलेश यादव, सचिन, डॉक्टर, ऐश्वर्या, पुलिस, अनारकली, नयनतारा, लता आदि नाम दे चुके हैं। इस उपलब्धि पर उन्हें पद्मश्री मिल चुका है।

## मुख्य रूप से इन देशों को होता है आम का निर्यात

इंग्लैंड, दुबई, जर्मनी, अमेरिका, शारजहा, स्पेन, कतर, स्वीडन, इटली, बरमिंहम, नीदरलैंड, आबूधाबी, मस्कट, नेपाल, नार्वे सहित कई देशोंको आम का निर्यात होता है।

## फल पट्टी के मुख्य 13 जिले

लखनऊ, बाराबंकी, अयोध्या, मेरठ, उन्नाव, बुलंदशहर, अमरोहा, सीतापुर, सहारनपुर, बागपत, प्रतापगढ़, वाराणसी व हरदोई।

# आम से खासी आमदनी की आस लगाए बैठे बागवान

प्रकाश तिवारी, उन्नाव

उन्नाव के सफीपुर और हसनगंज स्थित मैंगो बेल्ट का दशहरी, सफेदा, बादाम, तोतापारी, लंगड़ा व चौसा समेत अन्य प्रजातियों का आम देश-प्रदेश के अलावा विदेशों में भी खूब पसंद किया जाता है। इस बार जिले की मैंगो बेल्ट में आम ने अपने तय समय से करीब एक पखवाड़ा पहले ही दस्तक दे दी है। फसल भी काफी अच्छी होने से आम व्यापारियों में खुशी है। वहीं इस बार दशहरी समेत अन्य प्रजातियों के आम, 'आम आदमी' की थाली तक भी पहुंचने की पूरी उम्मीद जताई जा रही है। वहीं बागवान भी इस बार आम से खासी आमदनी होने की आस लगाए हुए हैं।

### बाजार में आने को तैयार फलों का राजा

**बृजेंद्र प्रताप सिंह, सफीपुर।** फलों का राजा आम हर किसी की पसंद होता है। गर्मी में रसीला आम ठंडक तो पहुंचाता ही है। साथ ही सेहत के लिए भी फायदेमंद होता है। आमतौर पर आम आने की शुरुआत जून के अंतिम सप्ताह तक होती है, लेकिन इस साल आम ने 20 दिन पहले ही दस्तक दे दी है। हालांकि अभी बाजारों में बिक रहा बादाम और तोतापरी आम जेब के लिए भारी साबित हो रहा है। बादाम आम 100 रुपये तो तोतापरी आम 145 रुपये प्रति किलो बिक रहा है। वहीं, दशहरी आम के दाम माफिक होने से यह आम आदमी तक पहुंच रहा है। इसकी कीमत अभी 45 रुपये से 70 किलो प्रति किलो तक है।

### भीषण गर्मी की मार झेल रहा आम

बागवान बताते हैं कि इस समय पड़ रही भीषण गर्मी से आम को नुकसान हुआ है। दशहरी आम अपने अपेक्षाकृत साइज से छोटा रह गया है। वहीं डाल का पका आम भी बाजार में अभी से नजर आने लगा है। बीते 20 दिनों से चल रही तेज आंधी ने बागवानों को परेशान किया है। इससे बागों में करीब 40 फीसदी फसल नष्ट हो गई है। हालांकि इसके बाद भी अभी पेड़ों में पर्याप्त मात्रा में आम मौजूद है।

### डाल का पका आम बाजार में मौजूद

पाल लगाकर पकाए गए आम के साथ ही डाल का पका दशहरी भी बाजार में उपलब्ध है, जहां डाल के पके आम के दाम 45 से 70 रुपये प्रति किलो हैं। वहीं पाल का लगा दशहरी लखनऊवा, लंगड़ा, मालदहा, केशनभोग, बंबइया 20 से 50 रुपये प्रति किलो तक बिक रहा है।

### बागवानों के बोल

आम उत्पादक शिवरतन यादव के अनुसार तेज धूप व गर्मी के बीच बारिश न होने से फलों में मिठास कम है। आकार छोटा होने से उत्पादन कम हुआ है। आम के समय से पहले पकने से भी समस्या हुई है।

महेश सिंह बताते हैं कि इस समय आम को पानी की जरूरत है। अगर इस समय भी बारिश होती है, तो यह आम के लिए फायदेमंद होगी, जिससे आम का साइज भी बढ़ेगा और यह अभी कुछ दिन तक डाल में टिका भी रहेगा, जिससे उसकी अच्छी रकम मिल सकेगी।

## बाजार में दशहरी की धाक, लंगड़ा व चौसा का करना होगा इंतजार

**लोकेंद्र सिंह, हसनगंज।** आम फलों का राजा हो भी क्यों न, यह देखने में तो सुंदर होता ही है। साथ ही इसका स्वाद भी लजीज होता है। सीजन आते ही बाजार में आम अपनी धाक जमा लेता है। उन्नाव का हसनगंज क्षेत्र आम फल पट्टी के रूप में मशहूर है। यहां आम की कई किस्में पैदा होती हैं। यहां से देश के कोने-कोने से लेकर विदेशों तक में इसका निर्यात होता है। इस समय दशहरी ने मंडी में अपनी धाक जमा रखी है। लंगड़ा व चौसा के स्वाद के लिए आम प्रेमियों को अभी थोड़ा इंतजार करना होगा। लगभग दो सप्ताह बाद यह भी बाजार में उपलब्ध होंगे। अभी अच्छे दाम न मिलने से किसानों व व्यापारियों के चेहरे पर निराशा जरूर है। शुरुआती दौर में दशहरी आम की बाजार में कीमत 1500 से 2300 रुपये प्रति क्विंटल है। हसनगंज में आम की दो मंडियां मियागंज व फरहदपुर हैं, जहां रोज हजारों क्विंटल आम की खरीद-फरोख्त होती है। जिले, प्रदेश व देश के अलावा खाड़ी देशों से लेकर अमेरिका तक इसका निर्यात होता है। बागवानों का कहना है कि आम की फसल की अच्छी पैदावार के लिए साल में पेड़ों की छह बार धुलाई करनी पड़ती है, जिससे लागत बढ़ जाती है और बाजार में अच्छे दाम न मिलने पर नुकसान भी होता है।

बागवान टिंकू यादव ने कहा कि आम की फसल में अब पहले से कम मुनाफा होता है। साल में छह बार कीटनाशक का छिड़काव कराने के बाद भी कीट का प्रकोप बना रहता है, जिससे पैदावार कम हो जाती है।

आम व्यापारी शिवबालक ने बताया कि इस बार फसल अच्छी थी, तो महंगे दामों पर बाग खरीदे थे, लेकिन पैदावार कम होने से मंडी में इसके अच्छे दाम नहीं मिल रहे हैं। इससे नुकसान होने का अनुमान है।

# खाड़ी देशों में मशहूर अमरोहा का आम

प्रबल प्रभाकर, अमरोहा

इस बार भी अमरोहा के आम की खाड़ी देशों में मांग बढ़ गई है। आम निर्यातकों को विदेश से आम के ऑर्डर मिल चुके हैं। हर वर्ष 200 टन आम को विदेश भेजा जाता है। जबकि इस बार 300 टन के आर्डर पहले ही मिल चुके हैं। कारोबारियों का कहना है कि मैंगो पैक हाउस के शुरू होने से आम कारोबार को और फायदा हुआ है। अमरोहा का आम देश-विदेश में मशहूर है। विदेश में आम के दीवानों को अमरोहा का आम काफी पसंद आता है। सरकार ने अमरोहा जिले में मैंगो पैक हाउस खोलकर एक बड़ी सौगात दी है। आमों की मांग और अधिक हो गई है। जिले में करीब 12 हजार हेक्टेयर भूमि में आम की फसल होती है। यहां से अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया, दुबई सऊदी ईरान, इटली समेत जर्मनी व इंग्लैंड तक आम निर्यात किए जाते हैं। सबसे ज्यादा अमरोहा के आम की मांग बढ़ी है। जिला मुख्यालय के अलावा तहसील हसनपुर, नौगांवा सादात में आम के बड़े-बड़े बाग हैं, जहां पर भारी मात्रा में आम की पैदावार होती है। इनमें दशहरी, चौसा, लंगड़ा, बंबइया और फजरी मशहूर है। विदेशी भी यहां के आम का स्वाद चखने का इंतजार करते हैं। अमरोहा के आम की मिठास के कई देशों में दीवाने हैं। कारोबार के नजरिए से इस बार यहां के आम उत्पादों के लिए भी मिठास भरी खबर है। इस साल अमरोहा के आम की एक बड़ी खेप दुबई जाएगी। सीजन की शुरुआत में ही एक स्थानीय निर्यातक को 300 टन आम का बड़ा ऑर्डर मिला है। सिर्फ दशहरी लंगड़ा व चौसा का निर्यात होना है। मैंगो संगठन के अध्यक्ष नदीम सिद्दीकी ने बताया कि दुबई से आम के आर्डर मिलने शुरू हो गए हैं। जुलाई माह से विदेश में भेजने शुरू हो जाऐंगे। इस साल जिस तरह से आर्डर मिल रहे हैं, उसे कारोबार बेहतर होने की उम्मीद लगाई जा सकती है। एक्सपोर्टर की माने तो अधिक गर्मी होने के कारण अभी आम को पेड़ों से तोड़ा नहीं जा रहा है। साथ ही आम में मिठास भी कम है। बरसात होने के बाद ही आम की फसल में और निखार आएगा, जिसके बाद आमों को विदेश भेजा जाएगा।

## इस वर्ष जापान से भी मिले आर्डर

विदेश के लोगों को अमरोहा का आम काफी पसंद है। खासकर सऊदी अरब और खाड़ी देश के लोग अमरोहा के आम की ज्यादा डिमांड करते हैं। यहां के आम के मिठास उनको भा गई है। एक एक्सपोर्टर ने बताया कि अरब के देशों तक आम का निर्यात हो रहा है। और बताया कि इस बार अधिक संख्या में खाड़ी देशों में आम निर्यात होगा। इस बार जापान से भी आर्डर मिले हैं।

## सबकी पसंद दशहरी चौसा व लंगड़ा

अमरोहा में पैदा होने वाला आम दुनियाभर में मशहूर है। दशहरी चौसा और लंगड़ा सभी की पसंद है। विदेशी मुल्कों में सबसे ज्यादा ऑर्डर भी इन तीन वैरायटी के ही मिलते हैं। एक निर्यातक बताते हैं कि इसके अलावा दूसरी किस्म के आम भी विदेशी कारोबारी के सामने रखे गए, लेकिन वह कोई खास अपनी पहचान नहीं छोड़ पाए, जिसके चलते आम उत्पादक भी अपने बागों में इन्हीं आम की पौध लग रहे हैं।

## इस वर्ष 10 प्रतिशत बढ़ी फसल

अमरोहा जिले के 12 हजार हेक्टेयर में आम की फसल की पैदावार होती है। इस बार पिछले वर्ष की तुलना में 10 प्रतिशत आम की फसल में वृद्धि हुई है। आम के बाग जिले के अमरोहा नौगांवा, हसनपुरा, रजबपुर क्षेत्र में स्थित है।

## शब्द चर्चा

# वेदों में 'पाक' शब्द का संदर्भ

वेदों की व्याख्या और यज्ञ-कर्मकांड से संबंधित प्राचीन ग्रंथ हैं, जो ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद से जुड़े हैं। इन ग्रंथों में "पाक" शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से यज्ञीय प्रक्रियाओं, अग्नि की परिवर्तनकारी शक्ति और कभी-कभी प्रतीकात्मक अर्थों में होता है।

1. ऐतरेय ब्राह्मण (ऋग्वेद से संबंधित):

ऐतरेय ब्राह्मण में "पाक" का प्रयोग यज्ञीय प्रक्रियाओं, विशेष रूप से "पाकयज्ञ" के संदर्भ में प्रमुख है। पाकयज्ञ गृहस्थों द्वारा किए जाने वाले साधारण यज्ञ हैं, जैसे हवन या छोटे अनुष्ठान, जहां अग्नि द्वारा हवि (आहुति) को पकाया जाता है।

उदाहरण: ऐतरेय ब्राह्मण (2.3) में यज्ञ की प्रक्रिया में अग्नि की भूमिका का वर्णन है, जहां "पाक" शब्द हवि को शुद्ध करने और देवताओं तक पहुंचाने की प्रक्रिया को दर्शाता है। यहां अग्नि को "पावक" (शुद्ध करने वाला) कहा गया है, जो "पाक" से व्युत्पन्न है।

अर्थ: यहां "पाक" का अर्थ है अग्नि द्वारा कच्चे पदार्थ (जैसे घी, अनाज) को परिपक्व या शुद्ध करना, जो यज्ञ का मूल उद्देश्य है।

डॉ. नीलिमा पांडेय
प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

शतपथ ब्राह्मण (यजुर्वेद से संबंधित): शतपथ ब्राह्मण में "पाक" शब्द का प्रयोग यज्ञों की जटिल प्रक्रियाओं और पाचन (शारीरिक और प्रतीकात्मक) के संदर्भ में मिलता है। यह ग्रंथ यज्ञ प्रक्रियाओं के साथ-साथ मानव शरीर के पाचन को भी जोड़ता है।

उदाहरण: शतपथ ब्राह्मण (6.1.2) में "पाकयज्ञ" का विस्तृत वर्णन है, जहां अग्नि में हवि को पकाने की प्रक्रिया को "पाक" कहा गया है। यहां "पाक" शब्द अग्नि की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाता है। प्रतीकात्मक अर्थ: शतपथ ब्राह्मण में "पाक" को प्रतीकात्मक रूप से आत्मा और शरीर के शुद्धिकरण से भी जोड़ा गया है, जैसे कि भोजन का पाचन और आत्मिक ज्ञान की परिपक्वता। शतपथ ब्राह्मण में सोमयज्ञ के दौरान सोम रस के "पाक" (शुद्धिकरण और परिपक्वता) की प्रक्रिया का भी उल्लेख है।

कौषीतकि ब्राह्मण (ऋ ग्वेद से संबंधित):

कौषीतकि ब्राह्मण में "पाक" का प्रयोग यज्ञ की प्रक्रिया में अग्नि की भूमिका और हवि के परिवर्तन के लिए किया गया है। यहां "पाक" का अर्थ है अग्नि द्वारा हवि को स्वीकार्य और शुद्ध बनाना।

उदाहरण: कौषीतकि ब्राह्मण (8.4) में अग्निहोत्र और अन्य यज्ञों में "पाक" की प्रक्रिया का वर्णन है, जहां अग्नि को "पावक" के रूप में वर्णित किया गया है।

गोपथ ब्राह्मण (अथर्ववेद से संबंधित):

गोपथ ब्राह्मण में "पाक" का उपयोग मुख्य रूप से यज्ञीय संदर्भों में होता है, लेकिन कुछ स्थानों पर यह भोजन और औषधियों के पकाने की प्रक्रिया से भी संबंधित है।

उदाहरण: गोपथ ब्राह्मण में औषधीय पदार्थों को अग्नि पर पकाने (पाक) की प्रक्रिया का उल्लेख है, जो आयुर्वेदिक संदर्भों से जुड़ा है।

यज्ञीय महत्व: ब्राह्मण ग्रंथों में "पाक" शब्द का सबसे प्रमुख उपयोग यज्ञों में अग्नि की परिवर्तनकारी शक्ति के संदर्भ में है। अग्नि को "पावक" या "पाक" का प्रतीक माना गया है, जो अशुद्ध को शुद्ध और कच्चे को पक्व बनाता है। पाचन और शुद्धिकरण: कुछ ब्राह्मण ग्रंथों में "पाक" का प्रतीकात्मक उपयोग भोजन के पाचन और आत्मिक शुद्धिकरण के लिए भी हुआ है, जो वैदिक दर्शन में शरीर और आत्मा के बीच संबंध को दर्शाता है।

रसशास्त्र और औषधि: "पाक" का उपयोग धातुओं और औषधियों को अग्नि पर शुद्ध करने की प्रक्रिया (रसपाक) के लिए भी किया गया है, जो रसायनशास्त्र से जुड़ा है। ब्राह्मण ग्रंथों में "पाक" शब्द मुख्य रूप से यज्ञीय प्रक्रियाओं, अग्नि की शुद्धिकरण शक्ति और प्रतीकात्मक रूप से परिवर्तन और परिपक्वता के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। यह शब्द वैदिक कर्मकांड और दर्शन में अग्नि की केंद्रीय भूमिका को रेखांकित करता है।

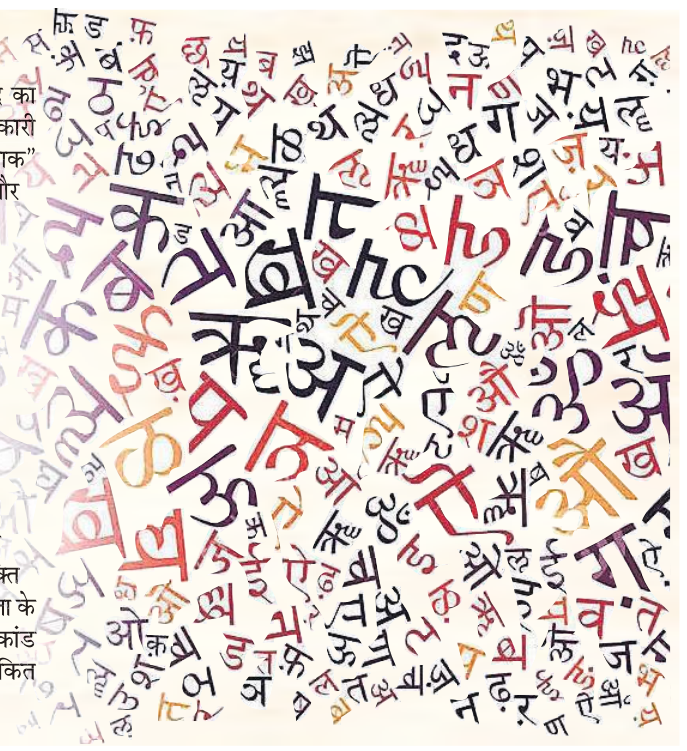

## कविता/गीत/गजल

### चलन

बड़ा गदर जो इस मन में
भावों की मत आशा करना।
जग निष्ठुर हैं कौन सुनेगा
मन की बातें मन में रखना।
निर्गत आएंगे कोह कपोल
छेड़ेंगे जब मन का कोना।
पुलकित होगा उनका मन
दृगजल न अब व्यर्थ बहाना।
दुख में जिसने दामन छोड़ा
खबर जरा तुम उनकी रखना।
आते जाते उस शिवालय में
निष्कपट मन प्रार्थना करना।
कुछ लोग मिलेंगे भरमाएंगें
उन्हें अपना है रंग जमाना।
तुम न आना बहकावे में
फितरत है वह बड़ा पुराना।
वह शब्दों में तुम्हें उलझाएंगे
बातों में तुम डूब न जाना।
कांटों पर भला जो चलना हो
पर भेद न उनको बतलाना।
वह घर-घर ढिंढोरा पीटेंगे
उन्हें दीप्त मानव हैं बन जाना।
वह नफरत का दरिया बहाएंगें
उन्हें श्रेष्ठ बना जग जाहिर करना।

वह चाल चलेंगे विरागों का
तुम मीठा राग सुना देना।
तुम रस्म निभाना मानवता का
तुम उत्तम सूचक बन जाना।
तुम दर्द न रखना सीने में
तारीफ में उनको बहला जाना।
तुम्हें याद रखेंगे सीने में
तुम यही चलन को अपनाना।

रानी प्रियंका वल्लरी
शिक्षिका

### दिल पर है बोझ

अब हिज्र में बसर है कभी थे विसाल में।
पैवस्त है वो आज भी ख्वाबो-खयाल में।

उसने बतौर तोहफा दिया था कभी मुझे,
खुशबू बसी हुई है अभी तक रुमाल में।

होकर खफा चला वो गया छोड़कर मुझे,
दिल पर है बोझ आज तलक इस मलाल में।

दिल कह रहा है लौट वो आएगा एक दिन,
रहती है फिक्र फंस न गया हो बवाल में।

मां बाप लग रहे हैं बुरे 'ज्ञान' किसलिए,
बेशक हुई है चूक कहीं देखभाल में।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
शाहजहांपुर

### बाग में अब नाग डंसने लगे

बाग में अब नाग डंसने हैं लगे
खौफ में अब लोग रहने हैं लगे

मखमली ढालान वे धानी हरे
दर्द का इतिहास कहने हैं लगे

फूटकर रोती है केसर की जमीं
अब दरिंदे वास करने हैं लगे

याद करके दृश्य खूनी खेल के
देवदारु भी सहमने हैं लगे

वादियों में जश्न के दिन ढल गए
मौत के बंदे टहलने हैं लगे

शांति का आखेट करने के लिए
तीर आखेटक के चलने हैं लगे

स्वर्ग परिणत हो गया है नरक में
दंश - पीड़ा रोज सहने हैं लगे।

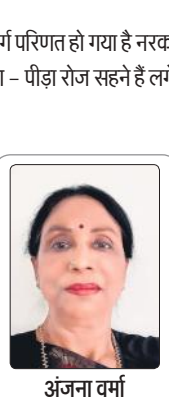

अंजना वर्मा
लेखिका

### जीवन के हर मौसम में

मिलो तो इस तरह मिलना
कि हवा हो जाएं लकीरों की
सारी शिकायतें
और यूं लगे जैसे सर्द
अहसासों के आंगन में
गुनगुनी धूप उतर आई हो
चुपके से
हंसो तो इस तरह हंसना
जैसे चहक उठता है सूरजमुखी
किरणों को देखकर
और कलियां निगाहों का
नजरबट्टू
पहना देती हैं उसे इठलाकर
कहो तो कुछ यूं कहना
जैसे बारिश की बूंदें लिपटकर
बोलती हैं पत्तों से
और ओढ़ लेते हैं वृक्ष
सरगम की नवीन धुन कोई
ठहरो तो यूं ठहरना
जैसे तारों को बांहों में भर
सदियों से आसमान पर ठहरा
है चांद
और देता है साथ, रात का
जीवन के हर मौसम में।

प्रीति अज्ञात जैन
वरिष्ठ लेखिका

## कहानी

# स्पर्धा का बोझ

अतुल कुमार और चिंतामणि दोनों गहरे मित्र थे। एक सरकारी बैंक की सिमरिया शाखा में उन दोनों की नियुक्ति तीन माह के अंतराल पर लिपिक के पद पर हुई थी। सिमरिया छोटा सा गांव टाइप का कस्बा था, जहां के लोग पुरानी सोच के थे। अतः वे अपने मकान में किराएदार रखना पसंद नहीं करते थे। बाबू शिव सहाय दो मकानों के स्वामी थे। एक मकान में वह स्वयं रहते थे और दूसरे मकान को वह किराए पर उठाते थे। अतुल कुमार ने सिमरिया शाखा में जब काम शुरू किया तो उसने बाबू शिव सहाय के मकान में एक कमरा किराए पर ले लिया था। मगर जब चिंतामणि सिमरिया शाखा में नौकरी के लिए आए तो बाबू शिव सहाय के मकान में कोई कमरा खाली नहीं था। सिमरिया में अंयत्र भी उन्हें कोई कमरा नहीं मिला। अतः वह अतुल के कमरे में ही रहने लगे।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ

सिमरिया कस्बे में कोई अच्छा होटल नहीं था। अतः चिंतामणि के प्रस्ताव पर अतुल ने उसके साथ मिलकर घर में ही खाना बनाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। साथ रहना, साथ खाना बनाना-खाना, साथ नौकरी करना, साथ-साथ घूमना फिरना, धीरे-धीरे उन दोनों में घनिष्ठता बढ़ती ही गई। इसके बाद दोनों मित्रों के लगभग एक साथ ही विवाह हुए। विवाह होने के बाद वे दोनों अपनी-अपनी पत्नी के साथ रहने के लिए व्यग्र रहने लगे, मगर मकान के अभाव में वे दोनों अपनी पत्नियों को सिमरिया नहीं ला सके। चिंतामणि ने यूनियन के नेताओं से कहकर अपना स्थानांतरण सिमरिया शाखा से जिला की मुख्य शाखा में करा लिया और अपनी पत्नी कामिनी के साथ शहर में आनंद पूर्वक रहने लगा। चिंतामणि के सिमरिया शाखा से जाने के बाद अतुल को सिमरिया कस्बे में अकेलापन और अधिक खलने लगा। उसने चिंतामणि से आग्रह किया कि किसी प्रकार यूनियन के नेताओं से कह-सुन कर उसका भी सिमरिया शाखा से स्थानांतरण करा दे। काफी दौड़-धूप के बाद दोनों मित्रों का प्रयास सफल हुआ और दो वर्ष बाद अतुल का स्थानांतरण भी जिले की मुख्य शाखा में हो गया। इसके बाद अतुल भी अपनी पत्नी शैली को शहर ले आया।

अब दोनों मित्र अवकाश के दिन सपत्नीक एक दूसरे के घर आने-जाने लगे। अतुल की पत्नी शैली को अपनी सुंदरता पर नाज था, तो कामिनी को अपने पिता की संपन्नता पर गर्व था। उन दोनों महिलाओं में सखी भाव होते हुए भी अपनी-अपनी श्रेष्ठता जाहिर करने की होड़ सी लगी रहती थी।

समय अपनी गति से व्यतीत हो रहा था और अतुल तथा चिंतामणि दोनों ही उन्नति की सीढ़ियां साथ-साथ चढ़ रहे थे। दोनों मित्रों को सहायक प्रबंधक के पद पर एक साथ प्रोन्नति मिली और कुछ महीनों के अंतर से दोनों ही मित्रों को पुत्र रत्न प्राप्त हुए। इसके बाद उन दोनों का अलग-अलग शहरों में स्थानांतरण हो गया, लेकिन उसके बाद भी उन दोनों में पत्रों और दूरभाष के माध्यम से संपर्क बना रहा।

यह संयोग ही था कि वे दोनों मित्र जब उप प्रबंधक के पद पर प्रोन्नत हुए तो उनका स्थानांतरण प्रधान कार्यालय में हो गया। अब दोनों मित्रों के परिवार पुनः एक ही शहर में रहने लगे और उनके बच्चे राणा प्रताप इंटर कालेज में पढ़ने लगे। अतुल का बेटा अथर्व और चिंतामणि का बेटा सूर्यांश कक्षा आठ में सहपाठी हुए। अब इन दोनों की माताएं जब एक-दूसरे से मिलतीं तो उनकी चर्चा में दो ही विषय प्रमुखता से रहते। वे या तो अपने अपने पुत्र की बड़ाई करतीं या फिर अपने अपने पति की बुराई करतीं। कभी-कभी जायका बदलने के लिए साड़ी, कंगन, चप्पल या पार्लर आदि की संक्षिप्त चर्चा भी कर लेतीं।

अतुल और शैली का बेटा अथर्व कुशाग्र बुद्धि का था। चिंतामणि और कामिनी का बेटा सूर्यांश भी पढ़ाई में ठीक ठाक था, परंतु वह अथर्व की तुलना में कुछ कमजोर था। वार्षिक परीक्षा में जब अथर्व ने कक्षा में सर्वाधिक अंक अर्जित किए और सूर्यांश को पांचवां स्थान प्राप्त हुआ तो कामिनी ने अपना सिर पीट लिया। फिर जब वह कुछ सामान्य हुई तो सूर्यांश पर अपना क्रोध उतारा। जब इससे भी उसे संतोष नहीं मिला तो उसने चिंतामणि को बच्चों के प्रति लापरवाह ठहराते हुए कहा कि या तो वह स्वयं सूर्यांश को घर में पढाएं अन्यथा उसके लिए ट्यूशन की व्यवस्था करे। चिंतामणि ने शीघ्र ही सूर्यांश के लिए ट्यूटर की व्यवस्था कर दी। घर में ट्यूटर के पढ़ाने से सूर्यांश नौवीं कक्षा में तृतीय स्थान पर रहा और अगले वर्ष हाई स्कूल में द्वितीय स्थान पर रहा, मगर अथर्व कक्षा में प्रथम ही रहा। दोनों बालक प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए, किंतु अथर्व के अंक सूर्यांश से छः प्रतिशत अधिक थे। यही कामिनी के दुख का कारण था, जो चिंतामणि के समझाने से भी कम न हुआ।

अब कामिनी ने शैली के घर आना-जाना और दूरभाष पर बात करना बहुत कम कर दिया था। वह लगातार अपने पुत्र सूर्यांश को अथर्व से कम अंक अर्जित करने के लिए धिक्कारती रहती थी। चिंतामणि ने उसे बहुत समझाया कि जो भी हो, हमारा बेटा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ है, मगर कामिनी की स्पर्धा तो अथर्व और उसकी मां शैली से थी, सो उसके ऊपर चिंतामणि के समझाने का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। सूर्यांश ने अगले दो वर्ष कठिन परिश्रम किया ताकि वह अपनी मां की अपेक्षाओं पर खरा उतर सके, किंतु इंटरमीडिएट में भौतिक शास्त्र का प्रश्नपत्र वह भली प्रकार से हल न कर सका। उसे लगा कि अथर्व से अधिक अंक अर्जित कर पाना तो नामुमकिन है, इस वर्ष तो वह शायद उत्तीर्ण भी नहीं हो सकेगा।

सूर्यांश अपनी इस संभावित असफलता और उससे उत्पन्न होने वाली स्थिति पर मन ही मन विचार कर दुखी होता रहा और एक दिन माल गाड़ी के सामने कूद कर उसने अपनी जान दे दी। यह समाचार सुनकर चिंतामणि और कामिनी दुख के महासागर में डूब गए। चिंतामणि जानता था कि उसके प्राण प्रिय बेटे सूर्यांश की मृत्यु के लिए उसकी पत्नी कामिनी ही जिम्मेदार है, जिसने बेटे की क्षमताओं की अनदेखी करते हुए अपनी व्यर्थ की स्पर्धा का बोझ बेटे पर डाल कर उसे मृत्यु का वरण करने के लिए विवश कर दिया, मगर पत्नी कामिनी की दीन दशा देखकर वह उससे कुछ कहने की स्थिति में भी नहीं था। कामिनी भी जानती थी कि बेटे की अकाल मृत्यु के लिए वही जिम्मेदार है और यही सोचते हुए वह अपनी छाती पीट-पीट कर पश्चाताप कर रही थी। अतुल, शैली और अथर्व को भी सूर्यांश की अकाल मृत्यु का कम अफसोस नहीं था, मगर अब जो हो गया, उसे ईश्वर की इच्छा मानकर संतोष करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प भी तो नहीं था।

## लघुकथा

# इंसानियत का रिश्ता

जिंदगी के इस मोड़ पर वह अपने आप को बिल्कुल असहाय सा महसूस कर रहा था। वह अगर साथ दे तो किसका! एक ओर अपना धर्म, अपने खून से जुड़े हुए लोग तो दूसरी तरफ इंसानियत और दोस्ती का अटूट, पवित्र एवं अनमोल रिश्ता।

कुछ इसी तरह का अंतरयुद्ध उसके भीतर और उसकी अंतरात्मा के बीच चल रहा था। "तुझे मारना होगा...हां मारना ही होगा, उसे जब कल वो तुझसे तेरे घर अकेले मिलने आएगा।" "वो मेरा दोस्त है, भला उसे मैं कैसे! यह तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता।" "हूं...दोस्त, वो भी गैर मजहब का" "पर इसमें उस मासूम का क्या दोष? "दोष तो तेरे भाई का भी कुछ नहीं था, फिर उसे एक वर्ग विशेष भीड़ में उसी के एक परिचित दोस्त ने क्यों जान से मारा?" "मालूम है, भूला नहीं हूं कुछ, पर दोबारा वही गलती दोहराने से क्या फायदा?" "अच्छा तो तू फिर कायर निकला, अरे बुजदिल कहीं के, क्या तुझे अपने धर्म की भी परवाह नहीं।

सुनील श्रीवास्तव
"मासूम"
मुरादाबाद

"हां! तू मुझे कायर ही समझ ले, अरे मुझे तो बस यह पता है कि इस धरती पर पहले इंसान जन्मा था, फिर उसके बाद मजहब, धर्म, जातियां, आदि की मोहर लगाकर उसे अनेक वर्गों में विभाजित किया गया।" "वो तेरा सगा भाई था, तेरा उससे खून का रिश्ता था।" "मेरा अपने भाई से खून का रिश्ता था, पर मेरा उस दोस्त से भी कोई रिश्ता है और वो इंसानियत का रिश्ता, मेरी समझ में यह रिश्ता इन सब रिश्तों से सबसे ऊपर है, अटूट है।" इतनी जिरह के बाद उसकी अंतरात्मा अब उसके ऊपर हावी हो चुकी थी। इस ऊहापोह की स्थिति से अब पूर्ण रूप से वह बाहर निकल चुका था।

# दर्द की दवा-दर्द

"पड़ गई न ठंड आपको। लगवा ही दिया न कोविड शील्ड का पहला डोज। तब से ही देखो ठीक से चला तक नहीं जा रहा। जिस तरफ की बांह में इंजेक्ट किया है, उसी तरफ की टांग से लंगड़ा कर चल रही हूं तभी से।" माधुरी ने पति मयंक को उलाहना देते कहा। "देखो, मुझे तो न लपेटों। जब आप राजी न हुईं तो मैं अकेला ही पास वाले सेंटर से लगवा आया था। वो तो भला हो डॉ. नितिन और उनकी पत्नी का, कि वह आपको फोन पर समझाकर साथ ले गए। चलो मेरी न सही, उनकी बात ही मानकर आप साथ चलीं गईं उनके।" मयंक ने जवाब दिया। "न जाती तो क्या करती, मुंह तो सूजा ही रहता आपका इस बात पर आपका।" माधुरी ने कहा। यह डेढ़ माह पहले की बात है। जब दूसरी डोज दोनों ने लगवा ली, तब चंद दिनों बाद वैसे ही संझा की सैर में माधुरी ने मयंक को कहा, "एक बात तो बताई ही नहीं मैंने आपको। जब से यह सेकेंड डोज लगवाई है, तब से मैं ठीक से चल पा रही हूं। आपने नोटिस किया?" "नहीं तो, पर यह तो गजब हो गया। यानी-तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा देना।" कहते हुए मयंक ने एक जोरदार ठहाका लगाया।

डॉ. आदर्श प्रकाश
वरिष्ठ लेखक

## समीक्षा

# तमस में दीप जलाती कहानियां

कृति का नाम - तमस का दीप (कहानी संग्रह)
कृतिकार - वीणा मेदिनी
प्रकाशक- दीपक पब्लिशर्स जयपुर
पृष्ठ - 225
प्रकाशन वर्ष - 2025
मूल्य - 695/- मात्र
समीक्षक - रमेशचन्द्र द्विवेदी, नैनीताल

राष्ट्रभाषा हिंदी के संवर्धन एवं संरक्षण में सतत् सन्नद्ध सुपरिचित कथाकार वीणा मेदिनी की यह सद्यः प्रकाशित कथाकृति है। पूर्व प्रकाशित प्रेरणा और फैसला जैसी कहानियों का यह नवीनतम संस्करण नए कलेवर और तेवर के साथ पाठकों को समर्पित है। इस संग्रह में कुल सत्ताइस कहानियां संग्रहित हैं। बुंदे,सामना, विश्वास, चलें पिकनिक पर,नदिया के पार, खामोश मुहब्बत, दिल मजबूर है, प्रेरणा, पाक मुहब्बत, शादी के बाद, शर्त, नालायक, गंगा स्नान, काश! मैं भूल पाता, मुहब्बत में पागल, फैसला, शक्ति, खोज, बेबसी, तवायफ, तपस्या और अजनबी जैसी कहानियां इस संग्रह में अंधेरे को चीरने की कोशिश कर रही हैं। सामाजिक जीवन के धरातल पर पात्रों के माध्यम से कलात्मक चित्र उभारने का काम कथाकार ने किया है। इन कहानियों में संवेदना की सहज भावाभिव्यक्ति है। भावों को संप्रेषित करती अभिव्यंजना है। कथाकार की पैनी दृष्टि इस संग्रह में शामिल प्रत्येक कहानी पर अपनी स्पष्ट छाप छोड़ती है। कहानी समाज का आईना होती है। इसीलिए वह पठनीय और बोधगम्य होती है। तमस का दीप कहानी संग्रह उक्त द्रष्टांत का सूचक है।

## व्यंग्य

# रीयल मां और रील वाली मां

वैश्विक स्तर पर सेल्फी वाली मां को छोड़कर संपूर्ण चराचर में मां की तीन प्रजातियां पाई जाती है। पहली फिल्मी मां, दूसरी इल्मी मां और तीसरी देवी मां। देवी मां प्रायः दीवारों पर टंगे तस्वीर के रूप में या मंदिरों में मूर्तियों के रूप में विद्यमान होती है। इनके लिए सभी संतान एक समान होती है। देवी मां की कई कोटि होती हैं अर्थात विद्या, धन, शक्ति आदि के लिए अलग-अलग मां। इन मां के दरबार में बच्चे अपनी आवश्यकता एवं उपयोगिता के अनुसार मनमर्जी अर्जी डालते हैं।

विनोद कुमार विक्की
व्यंग्यकार

अब बात करते हैं दूसरी कोटि के मां की अर्थात् फिल्मी मां की। इस प्रकार की माता प्रत्येक चरित्र में दमदार व समाज के लिए एक मिसाल होती है। वह सिलाई-बुनाई करके या घरों में बर्तन मांजकर अपने बच्चों को बहुत बड़ा आदमी प्रायः पुलिस अधिकारी बनाती हैं। वह अभाव में भी बच्चे की सभी इच्छा पूरी करती हैं। तीसरे प्रकार की इल्मी मां न तो सिलाई-कढ़ाई करती है, न ही मेहनत मजदूरी। यदि करती है, तो बमुश्किल अपना और अपने बच्चों का किसी तरह पेट भर पाती है। फिल्मी मां अपने बच्चे को कभी भी अपनी गरीबी या परिस्थिति नहीं बतलाती, क्योंकि फिल्मी मां के बच्चे समय से पूर्व परिपक्व हो चुके होते हैं, जबकि वास्तविक या इल्मी मां बच्चों के खान-पान, मोबाइल, बाईक आदि की डिमांड पर बच्चों को निकम्मा व नकारा शब्दों से संबोधित करते हुए आर्थिक विपन्नता का हवाला देकर स्वयं के भाग्य को कोसती दिखाई देती है।

हालांकि वर्तमान 5 जी युग में 'बीवी हो तो ऐसी' फेम बिंदु (रेखा की सासु मां) जैसी माता भी थोक भाव में उपलब्ध है। ये बच्चों से ज्यादा अपने फीगर और अपने सोशल मीडिया एकाउंट को लेकर चिंतित रहती है। आंचल वाली साड़ी की बजाय जींस, सलवार, नाइटी इनके पहनावा में शुमार होता है और जब सामने वाला व्यक्ति इनकी त्वचा से इनके मां नहीं होने का बोध कराता है, तो ये पल भर में भटूरे की तरह फूल जाती हैं। मन-मस्तिष्क आनंद के हिचकोले लेने लगता है। इन्हें कुंवारी या बिन बच्चे की मां कहलाने पर बेहद प्रसन्नता होती है। ये यात्रा, पार्टी या समारोह में बच्चे ढोने के लिए अपने पति परमेश्वर को, तो घर पर देख-रेख के लिए आया/धाई हायर करती हैं। बेबी एक साल का हुआ नहीं कि किड्स प्ले स्कूल भेजने का अभियान शुरू हो जाता है। इन आधुनिक मां के रक्त में ममता प्रेम वात्सल्य की जगह रील और फैशन का हीमोग्लोबिन प्रवाहित होता है। बच्चों के कैरियर से ज्यादा ये माता रील बनाने को चिंतित रहती है।

वर्तमान पारिवारिक परिदृश्य में ऐसी माता कुकुरमुत्ते की तरह हर दूसरे परिवार में उपलब्ध है। बहरहाल भूलोक पर मां के अनेक रूप एवं उप-प्रजाति सहित अनेक प्रजातियां विद्यमान है, जिनका अवतरण स्थिति और परिस्थिति पर निर्भर करता है।

# वर्णों का अनुनाद करते शब्द

पुस्तक-वर्णों का अनुनाद (हाइकु)
लेखक-डॉ.लवलेश दत्त
प्रकाशन-अनुकृति प्रकाशन, बरेली
मूल्य- 200/-
समीक्षक- अशोक अंजुम

कविता की इस जापान से आयातित लघुरूपा विधा 'हाइकु' को वही साध सकता है, जो शब्द की आत्मा को गहराई से पकड़ने, परखने की सामर्थ्य रखता हो। आपके पास 5-7-5, अर्थात् कुल 17 मात्राओं का अल्प भंडार है, उसी से कुछ ऐसा कहना है, जो तीर की भांति सनसनाता हुआ लोगों के अंतस को झंकृत कर दे। डॉ. लवलेश दत्त ने इस विधा को काफी कुछ साधने और उसमें अपने आप को निचोड़ने का काम किया है। 'वर्णों का अनुनाद' आपका सद्य प्रकाशित हाइकु संग्रह है, कम शब्दों में बड़ा कुछ कहना आसान नहीं है, डॉ.दत्त कहते हैं-

टंगे हो तुम/ यादों के आकाश में
चांद के जैसे।
खूब चमके / अंधेरे जीवन में
यादों का चांद।

आज जबकि सिर्फ 5-7-5 का गणित पूरा करने वाले तथाकथित सपाट हाइकुओं की खूब किताबें प्रकाशित हो रही हैं। डॉ.लवलेश दत्त के पास कविता की समझ है और कहने का सलीका भी, जो सुकून देता है। किताब के हाइकुओं में सपाटबयानी से इतर कविताई जीवित रही है। इसके लिए लेखक बधाई के पात्र हैं।

# स्वर्णप्राशन शिशु विकास के लिए अमृत

आज के युग में बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास अनेक कारणों से बाधित हो रहा है। बदलती जीवनशैली, प्रदूषित वातावरण, असंतुलित आहार, मोबाइल-टीवी की लत और समयपूर्व रोगों ने बालक अवस्था को सबसे अधिक प्रभावित किया है। ऐसे में भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धति-आयुर्वेद-हमारे पास एक आशा की किरण बनकर आती है। इसी चिकित्सा विज्ञान की एक अनुपम देन है स्वर्णप्राशन संस्कार, जिसे आयुर्वेद में बच्चों के बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए एक अमृत के समान माना गया है।

स्वर्णप्राशन संस्कार केवल एक औषधीय प्रक्रिया नहीं है, यह वैदिक संस्कृति की वह परंपरा है, जो बालक के संपूर्ण जीवन की आधारशिला रखती है। इस संस्कार का उद्देश्य बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना, उनकी मेधा शक्ति को तीव्र करना, स्मरणशक्ति को सशक्त बनाना और उन्हें रोगों से सुरक्षित रखना है। आयुर्वेद के अनुसार यदि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में सही समय पर उचित औषधियों एवं संस्कारों का प्रयोग किया जाए, तो व्यक्ति का स्वास्थ्य आजीवन सुदृढ़ बना रह सकता है। स्वर्णप्राशन दो शब्दों से मिलकर बना है- "स्वर्ण" अर्थात सोना और "प्राशन" अर्थात पिलाना या सेवन कराना। इस संस्कार में बच्चों को स्वर्ण भस्म (शुद्ध किए गए सोने का महीन चूर्ण), गाय का घृत (गाय के दूध से बना शुद्ध घी), मधु (प्राकृतिक शहद) और कुछ बुद्धिवर्धक एवं इम्यूनिटी बढ़ाने वाली औषधियां के साथ एक विशिष्ट अनुपात में मिलाकर पिलाया जाता है। यह योग न केवल औषधि का कार्य करता है, बल्कि एक संपूर्ण पोषक टॉनिक की तरह कार्य करता है। यह मिश्रण केवल औषधीय दृष्टि से ही नहीं, बल्कि एक तरह का जीवन टॉनिक है, जो मस्तिष्क की तंत्रिकाओं को पुष्ट करता है, पाचन क्रिया को मजबूत बनाता है, रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है और संपूर्ण शरीर को सशक्त करता है। आधुनिक समय में जब शिशु विभिन्न प्रकार की एलर्जी, अस्थमा, बार-बार जुकाम, संक्रमण, मानसिक तनाव, एकाग्रता की कमी और व्यावहारिक विकारों से ग्रस्त हो रहे हैं, तब स्वर्णप्राशन जैसा प्राकृतिक और सुरक्षित उपाय अत्यंत उपयोगी हो सकता है।



डॉ. प्रियांशी सक्सेना
कंसलटेंट एवं असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, कौमारभृत्य (बालरोग) विभाग रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल बरेली।

## आयुर्वेद के सिद्धांतों पर आधारित

इसके विपरीत, स्वर्णप्राशन पूरी तरह प्राकृतिक, बिना किसी रासायनिक तत्व के और आयुर्वेद सिद्धांतों पर आधारित एक सुरक्षित उपाय है, जो बच्चों के शारीरिक ही नहीं, मानसिक और भावनात्मक पक्ष को भी मजबूती देता है। भारत में पिछले कुछ वर्षों से आयुर्वेद के प्रति जागरूकता बढ़ी है, विशेषकर कोरोना महामारी के बाद लोगों ने आयुर्वेद की रोग प्रतिरोधक क्षमता को पहचानना शुरू किया। आयुष मंत्रालय द्वारा गिलोय, त्रिकटु, च्यवनप्राश आदि के साथ-साथ स्वर्णप्राशन की उपयोगिता पर भी बल दिया गया। विभिन्न राज्य सरकारों और निजी आयुर्वेद संस्थानों ने पुष्य नक्षत्र के अवसर पर सामूहिक स्वर्णप्राशन शिविरों का आयोजन आरंभ किया, जहां हजारों की संख्या में माता-पिता अपने बच्चों को लेकर पहुंचे। इससे यह सिद्ध होता है कि आधुनिक भारत अब अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है और आयुर्वेद को केवल वैकल्पिक चिकित्सा नहीं, बल्कि मुख्यधारा की चिकित्सा के रूप में देख रहा है। रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, बरेली जैसे संस्थानों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए हैं, जहां नियमित रूप से पुष्य नक्षत्र पर स्वर्णप्राशन संस्कार कराया जाता है और लोगों को इसके प्रति जागरूक किया जाता है। स्वर्णप्राशन संस्कार केवल एक औषधीय प्रक्रिया नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का एक हिस्सा है। यह संस्कार बच्चे में सकारात्मक ऊर्जा, आत्मविश्वास, स्मरण शक्ति और मानसिक शुद्धता का संचार करता है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि स्वर्ण भस्म शरीर में मेटाबोलिक एक्टिविटी को बढ़ाता है और न्यूरोनल नेटवर्क को सशक्त बनाता है, जिससे बालक में सीखने और समझने की शक्ति तीव्र होती है। यही कारण है कि प्राचीन भारत में जब गुरुकुल प्रणाली प्रचलित थी, तब बालकों को शिक्षा प्राप्ति से पूर्व स्वर्णप्राशन संस्कार द्वारा योग्य और ग्रहणशील बनाया जाता था। आज के डिजिटल युग में जहां बच्चों का संपर्क मोबाइल, टेलीविजन और कृत्रिम साधनों से बढ़ गया है, उनके मन-मस्तिष्क को संतुलित बनाए रखने के लिए स्वर्णप्राशन एक अमूल्य औषधीय माध्यम बन सकता है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में जहां शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर अनेक चुनौतियां हैं-जैसे पोषण की कमी, संक्रमण, मानसिक विकार, व्यवहारगत समस्याएं आदि। वहां स्वर्णप्राशन संस्कार सार्वभौमिक रूप से लाभकारी सिद्ध हो सकता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह न तो महंगा है, न ही जटिल। प्रशिक्षित वैद्य की देखरेख में स्वर्णप्राशन का निर्माण और वितरण किया जाए तो देश के करोड़ों बच्चों को दीर्घकालिक लाभ मिल सकता है। इसके लिए केवल सरकारों की ही नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों-शिक्षकों, अभिभावकों, डॉक्टरों, सामाजिक संस्थाओं की सामूहिक भागीदारी आवश्यक है।

स्वर्णप्राशन संस्कार पर विश्वास केवल इसलिए नहीं किया जाना चाहिए कि यह परंपरा है, बल्कि इसलिए किया जाना चाहिए, क्योंकि इसके पीछे गहन वैज्ञानिक तर्क, शास्त्रीय प्रमाण और अनुभवजन्य परिणाम हैं। हजारों अभिभावकों के अनुभव, हजारों वर्षों की आयुर्वेदिक परंपरा और आधुनिक शोध इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह संस्कार बच्चों को रोगमुक्त, तेजस्वी, आत्मविश्वासी और मानसिक रूप से संतुलित बनाता है। एम्स और बीएचयू जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों ने स्वर्ण भस्म पर अध्ययन किया है। इन अध्ययनों में यह पाया गया कि सूक्ष्म मात्रा में दी गई स्वर्ण भस्म शरीर में सूजन कम करने, मस्तिष्क की कार्यप्रणाली सुधारने और कोशिकाओं को पुनर्जीवित करने में सहायक है।

## संस्कार का विशेष नक्षत्र

एक शोध में पाया गया कि स्वर्णप्राशन लेने वाले बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता, न लेने वाले बच्चों की तुलना में बेहतर रही। भारत को यदि एक सशक्त और स्वस्थ राष्ट्र बनाना है, तो हमें आधुनिक शिक्षा और तकनीक के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक धरोहर-विशेषकर आयुर्वेद को भी अपनाना होगा। यह आवश्यक है कि हम अपने बच्चों को केवल सूचना देने वाले नहीं, बल्कि ज्ञानवान, आत्मनिर्भर और स्वस्थ नागरिक बनाएं। इस दिशा में स्वर्णप्राशन संस्कार एक मजबूत नींव रख सकता है। अतः यह समय की आवश्यकता है कि भारतवासी इस दिव्य आयुर्वेदिक परंपरा पर विश्वास करें, इसे व्यवहार में लाएं और आने वाली पीढ़ियों को एक ऐसा भविष्य दें, जो केवल तकनीकी रूप से नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध हो। स्वर्णप्राशन अपनाएं, संस्कारित भारत बनाएं: यही हमारी सांस्कृतिक जिम्मेदारी है और यही भविष्य की नींव है। स्वर्णप्राशन संस्कार जन्म से लेकर 16 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त माना गया है। यह विशेष रूप से 0 से 5 वर्ष की आयु में अत्यंत लाभकारी होता है, क्योंकि इस अवस्था में मस्तिष्क का विकास तीव्र गति से होता है। यह संस्कार विशेष तिथि पर यानी पुष्य नक्षत्र के दिन किया जाता है। यह दिन इसलिए चुना गया है, क्योंकि पुष्य नक्षत्र को आयुर्वेद में औषधीय प्रभावों की दृष्टि से अत्यंत शुभ और प्रभावी माना गया है। इसी दिन औषधियों का शरीर पर सकारात्मक प्रभाव अधिक होता है। स्वर्णप्राशन के अनेक लाभ हैं। सबसे प्रमुख लाभ है बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना। वर्तमान समय में बच्चों को जरा-सी मौसमी बदलाव से सर्दी-जुकाम, बुखार, एलर्जी, डायरिया जैसी समस्याएं हो जाती हैं। स्वर्णप्राशन शरीर की रोगों से लड़ने की शक्ति बढ़ाकर बच्चों को इन बीमारियों से बचाता है। इसके अतिरिक्त यह मस्तिष्क की ग्रोथ और नर्वस सिस्टम को मजबूत बनाता है, जिससे स्मरणशक्ति, मेधाशक्ति और एकाग्रता में आश्चर्यजनक वृद्धि होती है। बुद्धि वर्धन के साथ-साथ यह संस्कार पाचन शक्ति को मजबूत करता है, जिससे बच्चा भोजन को ठीक प्रकार पचाकर शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्वों को प्राप्त कर सकता है। यह विशेष रूप से उन बच्चों के लिए लाभकारी है, जो बहुत कमजोर, कमजोर भूख वाले, बार-बार बीमार पड़ने वाले या सुस्त प्रवृत्ति के होते हैं। आजकल बढ़ती मानसिक और शारीरिक प्रतिस्पर्धा में माता-पिता अपने बच्चों को महंगे टॉनिक, सप्लीमेंट्स और दवाएं देते हैं, जिनका दीर्घकालिक प्रभाव अक्सर शरीर पर नकारात्मक होता है। इसके विपरीत स्वर्णप्राशन पूरी तरह से प्राकृतिक, सुरक्षित और साइड इफेक्ट रहित होता है। यह एक हर्बल प्रिपरेशन है, जो हजारों वर्षों से सफलतापूर्वक प्रयोग में लाया जा रहा है।

## प्रमुख घटक

स्वर्ण भस्म: यह शुद्ध और सूक्ष्म रूप में तैयार किया गया सोने का चूर्ण होता है, जो शरीर में सेलुलर स्तर पर कार्य करता है।

गाय का घृत (घी): यह मस्तिष्क की ग्रोथ और स्मृति शक्ति को पोषण देता है।

शहद (मधु): यह औषधियों के अवशोषण को बेहतर बनाता है और रोग प्रतिरोधकता को बढ़ाता है।

औषधियां: इसमें ब्राह्मी, शंखपुष्पी, वचा, यष्टिमधु, अश्वगंधा, त्रिकटु जैसी औषधियां मिलाई जाती हैं, जो मस्तिष्क को शांत, स्थिर और सक्रिय बनाती हैं।

## सुरक्षित क्रमिक प्रक्रिया

क्या स्वर्णप्राशन सुरक्षित है? उत्तर है, हां। यदि यह प्रक्रिया योग्य और अनुभवी आयुर्वेदाचार्य की देखरेख में की जाए, तो यह पूरी तरह सुरक्षित, प्रभावी और अत्यंत लाभकारी होती है। बाजार में मिल रहे मिलावटी या अप्रमाणित उत्पादों से बचना आवश्यक है। इसलिए स्वर्णप्राशन केवल पंजीकृत आयुर्वेदिक केंद्रों या चिकित्सकों की देखरेख में ही कराना चाहिए।

स्वर्णप्राशन संस्कार एक बार कराने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक क्रमिक प्रक्रिया है। इसे हर महीने पुष्य नक्षत्र पर कराना चाहिए। लगातार 6 माह या 1 वर्ष तक यह संस्कार कराने से बच्चों में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं। कुछ माता-पिता इसे जन्म से ही प्रारंभ कर देते हैं और 16 वर्ष तक लगातार करवाते हैं, जिससे संपूर्ण बाल्यकाल की नींव अत्यंत सुदृढ़ बन जाती है।

आयुर्वेद के अनुसार मनुष्य का शरीर पंचमहाभूतों-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से बना है। जब इन तत्वों का संतुलन बिगड़ता है, तो शरीर रोगग्रस्त होता है। स्वर्णप्राशन इन तत्वों के संतुलन को बनाए रखने का कार्य करता है और शरीर तथा मन को प्राकृतिक रूप से संतुलित करता है। इसके माध्यम से आयुर्वेद "रोग की रोकथाम" की संकल्पना को मूर्त रूप देता है। आज के समय में आयुर्वेद "रोग न होने दें" इस सिद्धांत पर कार्य करता है। स्वर्णप्राशन इस सिद्धांत का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह न केवल बीमारियों से रक्षा करता है, बल्कि बच्चों को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाता है। भारत में कई प्रतिष्ठित आयुर्वेदिक संस्थान इस संस्कार को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से प्रमाणित कर रहे हैं।

विशेषकर रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल बरेली जैसे संस्थान पुष्य नक्षत्र के अवसर पर प्रतिमाह स्वर्णप्राशन संस्कार का आयोजन करते हैं, जहां शुद्ध औषधियां और विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में बच्चों को यह आयुर्वेदिक अमृत पिलाया जाता है। यह जागरूकता की आवश्यकता है कि आधुनिक माता-पिता अपने बच्चों को केवल सप्लीमेंट्स तक सीमित न रखें, बल्कि आयुर्वेद की इस महान परंपरा को समझें और अपनाएं। यदि आज हम बच्चों को यह अमृत प्रदान करें, तो कल का भारत तेजस्वी, बुद्धिमान और रोग-मुक्त होगा। स्वर्णप्राशन एक परंपरा नहीं, भविष्य की तैयारी है। यह एक ऐसा वैदिक उपहार है, जो केवल शरीर ही नहीं, बल्कि बच्चों के समूचे व्यक्तित्व को निखारता है। प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि वे इस प्राचीन विज्ञान को अपनाकर आने वाली पीढ़ियों को स्वर्णिम बनाएं।

---

खाना खजाना

# खीरा-नारियल एनर्जी स्मूदी

गर्मी का मौसम आते ही हम सबको ठंडे ताजगीपूर्ण पेय भाने लगते हैं। आइए बताते हैं ऐसा ही एक ताजगी भरा ड्रिंक, जो शरीर को ठंडक देगा और दिनभर की थकान को भी दूर करेगा। खीरा-नारियल से बना यह एनर्जी स्मूदी सभी लोगों के लिए वरदान से कम नहीं है या ये कहे परफेक्ट है, क्योंकि जो लोग कामकाजी होते हैं और उन्हें एनर्जी, हाइड्रेशन और तनाव से राहत की जरूरत होती है। इसे बनाना भी आसान है।

**सामग्री**

- 1 बड़ा खीरा (छीलकर टुकड़ों में काटा हुआ)
- 1 कप नारियल पानी
- 1 आधा कप ताजा नारियल का गूदा (या 2 टेबल स्पून कद्दूकस किया हुआ नारियल)
- 8-10 पुदीने की पत्तियां
- 1 टेबल स्पून नींबू का रस
- 1 टेबल स्पून शहद (वैकल्पिक, स्वाद के लिए)
- 1 चम्मच भुना हुआ जीरा पाउडर
- 4-5 बर्फ के टुकड़े

**बनाने की विधि** मिक्सी में खीरा, नारियल पानी, नारियल का गूदा, पुदीने की पत्तियां, नींबू का रस और शहद डालें। अच्छे से ब्लेंड करें ताकि स्मूदी एकदम चिकनी बन जाए।

स्वाद बढ़ाएं: इसमें भुना हुआ जीरा पाउडर डालकर दोबारा हल्का सा ब्लेंड करें। यह स्मूदी को एक देसी टच देगा।

सर्व करें: स्मूदी को दो गिलास में डालें। बर्फ के टुकड़े डालें और ऊपर से एक पुदीने की पत्ती से सजाएं और ठंडा-ठंडा सर्व करें।

सर्व करने का तरीका- इसे सुबह नाश्ते से पहले या दोपहर में स्नैक के तौर पर पिएं।

लंबे गिलास में सर्व करें, ताकि यह आकर्षक लगे। साथ में कुछ भुने हुए मखाने या बादाम सर्व करें, ताकि प्रोटीन भी मिले।

# ऐसे करें घुंघराले बालों की देखभाल

शहनाज हुसैन
सौंदर्य विशेषज्ञ

घुंघराले बाल जितने सुंदर लगते हैं, उन्हें संभालना उतना ही मुश्किल होता है। खासतौर से गर्मी के मौसम में। जब पसीना, प्रदूषण और धूल-मिट्टी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, तब इन्हें संभालना और भी मुश्किल हो जाता है। इस मौसम में तेज धूप भी बालों की नमी सोख लेती है, जिससे ये और भी ज्यादा रफ और डैमेज नजर आने लगते हैं। जबकि ज्यादातर लोग इन्हें संभालने का सही तरीका ही नहीं जानते। अगर आपके बाल भी घने-घुंघराले हैं, तो आइए जानते हैं, इन्हें संभालने के कुछ घरेलू उपाय।

### हर्बल शैंपू

शैम्पू जरूरी है, लेकिन एसएलएस और पैराबेंस वाले केमिकल बेस्ड शैंपू का उपयोग बालों के लिए हानिकारक है। बेहतर विकल्प हर्बल शैंपू का उपयोग करना होगा, जो आपके कर्ल को परिभाषित करता है और बिना किसी साइड इफेक्ट के फ्रिज को संभालने में मदद करता है। बालों को रोजाना वॉश करने से नेचुरल ऑयल की कमी बढ़ने लगती है।

उदाहरण के लिए, आप भृंगराज एवं आंवला से बने हेयर क्लींजर का इस्तेमाल कर सकते हैं। भृंगराज, आंवला, ब्राह्मी, शिकाकाई और मेथी के बीज का अर्क बालों के विकास को बढ़ावा देगा और घुंघराले बालों की सुंदरता बनाए रखने में भी मददगार होगा।

### हर्बल हेयर कंडीशनर

अपने बालों से प्राकृतिक तेल को हटाने और उन्हें किसी भी नुकसान से बचाने के लिए धोने के बाद कंडीशनर का उपयोग करना अनिवार्य है। आपके बालों को रोजमर्रा और थाइम जैसे प्राकृतिक अवयवों से युक्त एक गहरे कंडीशनर की आवश्यकता होती है। ये शक्तिशाली जड़ी-बूटियां बालों को सुरक्षा, पोषण और घनापन प्रदान करने के लिए जानी जाती हैं।

### माइक्रोफाइबर तौलिया का करें इस्तेमाल

अगर आपको लगता है कि आपका बॉडी टॉवल आपके घुंघराले बालों को सुखाने के लिए अच्छा है, तो आप गलत हैं। बालों को टूटने से बचाने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके बाल क्षतिग्रस्त न हों, अपने बालों के लिए एक अलग माइक्रोफाइबर तौलिया का उपयोग करना शुरू करें।

ज्यादातर लड़कियां तौलिए से जोर-जोर से रगड़कर बालों को सुखाती हैं। जबकि यह एक गलत तरीका है। इससे बालों के रोम नष्ट हो जाते हैं। इसलिए अपने बालों को सुखाने के लिए धीरे-धीरे दबाएं और जोर से रगड़ने से बचें।

### सही तरीके से ब्लो ड्राई करें

आपने यह महसूस किया है कि ब्लो ड्राई सेशन के बाद आपके बाल और भी ज्यादा रूखे हो जाते हैं, तो इसका कारण आपके बालों को सुखाने का गलत तरीका हो सकता है। यह जरूरी है कि आप अपने बालों को सीधी हीट देने से बचाएं और डिफ्यूजर अटैचमेंट लगाएं। यह आपके बालों पर गर्मी को सीमित करेगा और फ्रिज को रोकने में मदद करेगा।

### स्टाइलिंग का तरीका

आपने कर्ल को मैनेज करने के लिए बाजार में कई उत्पाद उपलब्ध हैं, लेकिन ये उत्पाद रसायनों से ज्यादा कुछ नहीं हैं, जो लंबे समय में आपके बालों को और नुकसान पहुंचाते हैं, साथ ही बालों की गुणवत्ता को बहुत प्रभावित करते हैं। इसलिए आपको अपने कर्ल को स्टाइल करने का प्राकृतिक तरीका अपनाना चाहिए। तौलिए से अच्छी तरह सूखाने के बाद आप अपने बालों को हर्बल हेयर टॉनिक या हेयर सीरम लगा सकते हैं। घर पर बने हेयर सीरम के लिए आप जोजोबा को लैवेंडर एसेंशियल ऑयल की कुछ बूंदों के साथ मिला सकते हैं।

### कर्ली हेयर के लिए हेयर मास्क

हेयर मास्क आपके कर्ल की खूबसूरती को बनाए रखने के लिए जरूरी है। इसलिए मेरा सुझाव है कि या तो आप बालों के लिए घर पर बने मास्क का इस्तेमाल करें या हर्बल हेयर मास्क लें। हेयर मास्क के लिए आसान घरेलू उपाय होगा 1/2 कप दही में 1 बड़ा चम्मच शहद मिलाएं। अब इस मिश्रण को अपने नम बालों पर लगाएं, अपने बालों को शॉवर कैप से ढकना न भूलें और इसे 20 मिनट तक लगा रहने दें, उसके बाद धोलें।

### बालों को सही तरीके से सुलझाएं

कभी भी नहाने के तुरंत बाद अपने बालों को कंघी न करें, जब तक बाल बहुत गीले हों और टपक रहे हों, तब तक उन्हें कंघी नहीं करना चाहिए। इससे बालों की जड़ें क्षतिग्रस्त हो जाती हैं और बाल झड़ने लगते हैं। बालों को सुलझाने के दो तरीके हैं, पहला अपने बालों को सुलझाने के लिए अपनी उंगलियों का इस्तेमाल करें, दूसरा अपने घुंघराले बालों को सुलझाने के लिए चौड़े दांतों वाली कंघी का इस्तेमाल करें।

---

फिल्म जगत

# स्टोरी ऑफ इतिहास

स्टोरी ऑफ इतिहास फिल्म को देखिए और मुख्यतः बच्चों को परिचित जरूर कराएं। फिल्म अभी थिएटर में उपलब्ध है, ये फिल्म अगर प्रचार व चर्चा में आ गई तो सही मायने मे एक क्रांति कहलाएगी और वैसे ये फिल्म अपने आपमें एक क्रांति है। पश्चिम के लोगों ने ब्रिटिशन, जो मनगढ़न इतिहास भारतियों पर थोपा था। आज उस झूठे इतिहास को तथ्यों के साथ उकेरा गया है और एक माइंडसेट (नेरेटिव) सेट किया जाता रहा है, उसको भी ये फिल्म उखाड़ फेंकती है। जैसे अंग्रेजों ने शिक्षा नीति को बदल दिया था। गरुकुल शिक्षा को बुरे तरीके से प्रभावित किया था। उन सब तथ्यों को फिल्म उजागर करती है।

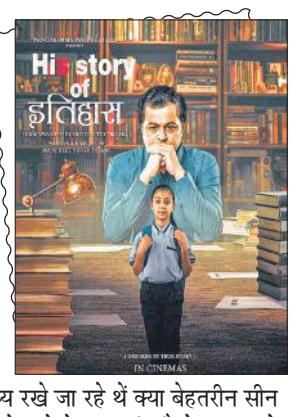


इस प्रकार से ये फिल्म प्रस्तुत करती है कैसे लोगों ने इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया। मनगढ़ंत तरीके से फिल्म के सेकेंड हाफ में जब उनके सामने तथ्य रखे जा रहे थे क्या बेहतरीन सीन था वो जैसे रवान्डा जेनोसाइड के बारे में बताया कि कैसे समाज को अलग-अलग वर्गों-जाति में बांटकर जेनोसाइड हुआ था। ऋग्वेद के श्लोक का गलत उल्लेख कर, दास प्रथा की बात की थी, उसकी भी धज्जियां उड़ाई हैं। फिल्म का मुख्य पात्र कहता है कि हिन्दू संस्कृति को जो तुम दास्य प्रथा से जोड़ रहे हो बिना तथ्यों के आधार पर, बल्कि वामपंथी ये कहते है कि अन्य कम्युनिटी ने दास प्रथा को समाप्त किया और समानता की बातें सिखाईं। इसी मनमानी को सटीक तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है और जब प्रूफ के साथ ये विचार उनके समीप रखे जा रहे थे, तो वो कैसे बिलबिला उठे थे और मुख्य पात्र को सांप्रदायिक की संज्ञा देने लगे। ये फिल्म पहले देखिए, बल्कि अपने समीप अन्य लोगों को भी ये फिल्म देखने के लिए प्रेरित करें।

समीक्षक-**निदेश वर्मा**

---

## साप्ताहिक राशिफल

-पं. मनोज कुमार द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, कानपुर

**मेष** इस सप्ताह आपकी बहुप्रतीक्षित मनोकामना पूरी हो सकती है। करियर-कारोबार से जुड़े महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए भी पूर्वार्ध का समय अत्यधिक शुभ साबित होगा। इस दौरान रोजी-रोजगार के सिलसिले में की जाने वाली यात्रा सुखद एवं लाभप्रद साबित होंगी।

**वृष** यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ साबित होने वाला है। पूरे सप्ताह आपको सौभाग्य का साथ मिलेगा। करियर और कारोबार में आप कोई बड़ा निर्णय ले सकते हैं। यदि आप लंबे समय से नौकरी में बदलाव के लिए प्रयासरत थे तो आपकी यह मनोकामना पूरी हो सकती है।

**मिथुन** यह सप्ताह जीवन में नए अवसरों के द्वार खोलने वाला साबित होगा। रोजगार के लिए प्रयासरत लोगों को मनचाहा रोजगार मिल सकता है तो वहीं पहले से कार्यरत लोगों की पदोन्नति संभव है। कार्यक्षेत्र में आपको अपने सीनियर और जूनियर दोनों से सहयोग और समर्थन हासिल होगा।

**कर्क** इस सप्ताह किस्मत कदम-कदम पर साथ मिलता हुआ नजर आएगा। आप जिस भी दिशा में प्रयास करेंगे, उसमें आपको मनचाही सफलता मिलती हुई नजर आएगी। खास बात यह कि ऐसा करते समय आपके इष्टमित्र और शुभचिंतक तन-मन-धन से आपके लिए खड़े नजर आएंगे।

**सिंह** इस सप्ताह आलस्य और अभिमान से बचना होगा अन्यथा बनती हुई बात भी बिगड़ सकती है। सप्ताह की शुरुआत में किसी बात को लेकर स्वजनों के साथ वाद-विवाद होने की आशंका है। पारिवारिक एकता एवं सामंजस्य को बनाए रखने के लिए छोटी-मोटी बातों को तूल न देना बेहतर रहेगा।

**कन्या** यह सप्ताह अत्यंत ही शुभ साबित होगा। आपके सोचे हुए काम समय से होते हुए नजर आएंगे और आपको घर-बाहर दोनों जगह लोगों से भरपूर सहयोग और समर्थन मिलेगा। लोग आपके निर्णय और प्रयासों की तारीफ करेंगे। करियर-कारोबार में तरक्की होगी। नौकरीपेशा लोगों को मनचाहा प्रमोशन या फिर तबादला मिल सकता है।

**तुला** इस सप्ताह अपने सोचे हुए कार्य को पूरा करने के लिए बेहद सधे हुए कदमों के साथ आगे बढ़ने की जरूरत रहेगी। यदि आप व्यवसाय से जुड़े हुए हैं तो आपको कारोबार से जुड़ा कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले अपने शुभचिंतकों से सलाह अवश्य लेनी चाहिए।

**वृश्चिक** इस सप्ताह नुकसान औरअपमान से बचने के लिए किसी भी नियम को तोड़ने से बचना चाहिए। आपका जीवन थोड़ा असंतुलित रहने वाला है। आपको एक तरफ जहां पारिवारिक जिम्मेदारी को निभाने की चिंता बनी रहेगी तो वहीं करियर-कारोबार से जुड़ी चुनौती भी आपकी परेशानी का बड़ा कारण बनेगी।

**धनु** इस सप्ताह कार्यों को समय से पूरा करने और अपनी जिम्मेदारियों का निभाने लिए जरा ज्यादा ही भागदौड़ करनी पड़ सकती है। सप्ताह की शुरुआत में भूमि-भवन से जुड़े विवाद आपकी चिंता का विषय बन सकते हैं, जिसका समाधान खोजने के लिए आपको कोर्ट-कचहरी के चक्कर तक लगाने पड़ सकते हैं।

**मकर** यह सप्ताह शुभता और सौभाग्य को लिए हुए है। इस सप्ताह आपको करियर-कारोबार में मनचाही सफलता के साथ धन, यश एवं मान-सम्मान मिलेगा। सप्ताह की शुरुआत में किसी धार्मिक-मांगलिक कार्यक्रम में सहभागिता का अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान लंबे समय बाद किसी प्रिय व्यक्ति से मुलाकात संभव है।

**कुंभ** यह सप्ताह जीवन से जुड़ी तमाम परेशानियों को दूर करते हुए राहत प्रदान करने वाला साबित होगा। यदि विदेश में करियर-कारोबार के लिए प्रयासरत हैं तो इस सप्ताह के पूर्वार्ध में आपको कोई शुभ सूचना मिल सकती है। यह समय अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोगों के लिए अत्यंत ही शुभ साबित होगा।

**मीन** इस सप्ताह सोचे हुए कार्यों को समय पर पूरा करने तथा उसमें अपेक्षित सफलता प्राप्ति हेतु विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। करियर-कारोबार के साथ-साथ घरेलू समस्याएं आप पर हावी होंगी। जीवन से जुड़ी तमाम तरह की चुनौतियों का सामना करने के लिए आपको सभी को मिलाकर चलना उचित रहेगा।

## वर्ग पहेली (काकुरो)

काकुरो पहेली वर्ग पहेली के समान हैं, लेकिन अक्षरों के बजाय बोर्ड अंकों (1 से 9 तक) से भरा है। निर्दिष्ट संख्याओं के योग के लिए बोर्ड के वर्गों को इन अंकों से भरना होगा। आपको दी गई राशि प्राप्त करने के लिए एक ही अंक का एक से अधिक बार उपयोग करने की अनुमति नहीं है। प्रत्येक काकुरो पहेली का एक अनूठा समाधान है।

### काकुरो 12

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | 7 | 6 | | | |
| 4 | | | | | |
| 6 | | | | | |
| 15 | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

### काकुरो 11 का हल

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | 14 | 13 | 23 |
| | | 13 14 | 5 | 2 | 6 |
| | 24 23 | 1 | 9 | 6 | 8 |
| 8 | 6 | 2 | 13 5 | 4 | 9 |
| 14 | 8 | 3 | 2 | 1 | |
| 20 | 9 | 8 | 3 | | |

**जोक्स ऑफ द डे**

टीचर, छात्र से - अगर कोई स्कूल के सामने बम रख जाए, तो तुम क्या करोगे?

छात्र- दो-तीन घंटे देखूंगा, अगर कोई उठाकर ले जाता है, तो ठीक है। नहीं तो स्टाफ रूम में रख देंगे। फिर टीचर की हालत खराब।

पति-पत्नी रेलवे स्टेशन पर खड़े ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। तभी एक गाड़ी आई जिस पर बॉम्बे मेल लिखा था।

पति भाग कर गाड़ी में चढ़ गया।

बीवी से बोला-जब बॉम्बे फीमेल आए तो तू भी चढ़ जाना।

# असल राष्ट्रकूट थे गंगईकोड

राष्ट्रकूट राजा (780–900 ई.) दक्षिण भारत के ऐसे पहले शासक थे, जिन्होंने ढंग से बड़े स्तर पर उत्तर भारत की राजनीति में दखल दिया और तत्कालीन दो बड़े साम्राज्य गुर्जर प्रतिहार वंश और बंगाल के पालवंश के शासकों को हराया। यह वही समय था जब 'कन्नौज' पाटलिपुत्र को पछाड़कर पूरे उत्तर भारत या कहें तो भारतवर्ष की राजधानी बन गया था। सीधे शब्दों में जो कन्नौज पर अधिकार रखता वह भारत का सम्राट होता। कन्नौज के दो बड़े शासक हर्षवर्द्धन और यशोवर्मा का युग खत्म हो गया था, कन्नौज पर कमजोर आयुधवंशी काबिज थे। स्थिति का फायदा उठाकर प्रतिहार शासक वत्सराज ने कन्नौज राजा इंद्रायुध को हराकर अपने अधीन कर लिया। उधर पाल नरेश धर्मपाल भी कन्नौज पर नजरें गड़ाए हुए था, इसलिए वत्सराज ने धर्मपाल पर भी आक्रमण कर दिया।

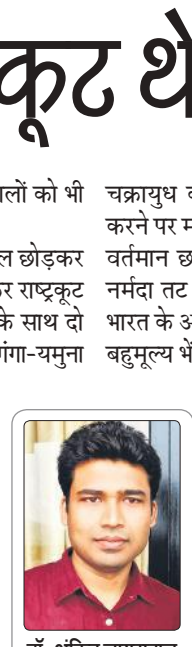

डॉ. अंकित जायसवाल
गोरखपुर

राधनपुर अभिलेख के अनुसार वत्सराज ने धर्मपाल की राजलक्ष्मी को हस्तगत करते हुए उसके दो राजछत्र छीन लिए अर्थात धर्मपाल पराजित हुआ, प्रतिहारों ने पालों का धन लूट लिया।

अभी वत्सराज रास्ते में ही था कि महाराष्ट्र के राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने वत्सराज पर आक्रमण कर दिया। ध्रुव ने वत्सराज को हराया, पालों से लुटे हुए धन को लूट लिया। वत्सराज जान बचाकर राजस्थान की ओर भाग गया। कुछ स्रोतों के अनुसार ध्रुव ने पालों को भी बंगाल की ओर खदेड़ा।

संपूर्ण दक्षिणापथ (सुदूर तमिल और केरल छोड़कर दक्षिण भारत) में अपना साम्राज्य स्थापित कर राष्ट्रकूट ध्रुव ने नर्मदा के किनारे अपनी बड़ी सेना के साथ दो बेटों गोविंद तृतीय और इंद्र को लगाकर खुद गंगा-यमुना के मैदानों में घुस गया। झांसी के पास ध्रुव ने वत्सराज को हराया फिर धर्मपाल का बंगाल तक पीछा किया।

खैर, ध्रुव ज्यादा देर उत्तर भारत ठहर न सका, अपने राज्य की आंतरिक कलह के कारण वापस लौट गया, क्योंकि वह अपने भाई राष्ट्रकूट शासक गोविंद द्वितीय को मारकर शासक बना था। इसी संघर्ष में प्रतिहार राजा वत्सराज ने ध्रुव के विरुद्ध गोविंद द्वितीय का पक्ष लिया था इसलिए ध्रुव का उत्तरी अभियान बदला लेने जैसा था।

दक्षिण वालों के लिए उत्तर भारत का विजेता होना इतना महत्वपूर्ण था कि ध्रुव ने इसे अविस्मरणीय बनाने के लिए अपने राजचिन्ह पर गंगा-यमुना के प्रतीक लगवा दिए।

ध्रुव के बाद उसका बेटा गोविंद तृतीय शासक बना, उसने भी उत्तर भारत पर हमला बोला। इस समय प्रतिहार वत्सराज का बेटा नागभट्ट द्वितीय और धर्मपाल फिर से अपने-अपने क्षेत्रों में मजबूत हो गए थे। गोविंद तृतीय ने बुंदेलखंड में नागभट्ट द्वितीय को हराया और कन्नौज की गद्दी पर बैठे धर्मपाल के कठपुतली शासक चक्रायुध को हराकर धर्मपाल को भी आत्मसमर्पण करने पर मजबूर किया। जल्द ही उसने कोसल, बंगाल वर्तमान छत्तीसगढ़ और उड़ीसा को भी जीत लिया। नर्मदा तट के भड़ौच में सम्मान समारोह हुआ, उत्तर भारत के अनेक छोटे-छोटे राजाओं ने गोविंद तृतीय को बहुमूल्य भेंट दिए।

उधर दक्षिण के राज्यों ने गोविंद तृतीय के न रहने पर राष्ट्रकूट साम्राज्य के विरुद्ध एक संघ बना लिया (पल्लव, पाण्ड्य, चोल, चेर और पश्चिमी गंग शासक)।

गोविंद को वापस दक्षिण आना पड़ा और उसने तुंगभद्रा नदी के किनारे इन सबको खूब धोया, गंग राजा वहीं मारा गया। गोविंद ने लंका पर भी चढ़ाई की, लंकेश्वर ने अधीनता के लिए अपनी मूर्ति भिजवाई, जिसे गोविंद ने कांची के एक मंदिर में कीर्तिस्तंभ के रूप में स्थापित किया।

संजन अभिलेख के अनुसार गोविंद के घोड़े गंगा के झरनों में नहाते थे (कवि का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन), उसके हाथियों ने गंगाजल पीया था। उस समय राष्ट्रकूट इतने शक्तिशाली थे कि समकालीन अरबी लेखकों ने राष्ट्रकूट साम्राज्य को दुनिया के चार साम्राज्यों में से एक माना है, तीन अन्य थे- अरब, मिस्र और चीन का साम्राज्य।

आज के माहौल के अनुसार इन तीनों साम्राज्यवादी वंशों को हम हिन्दू, बौद्ध और जैन धर्म का युद्ध कह

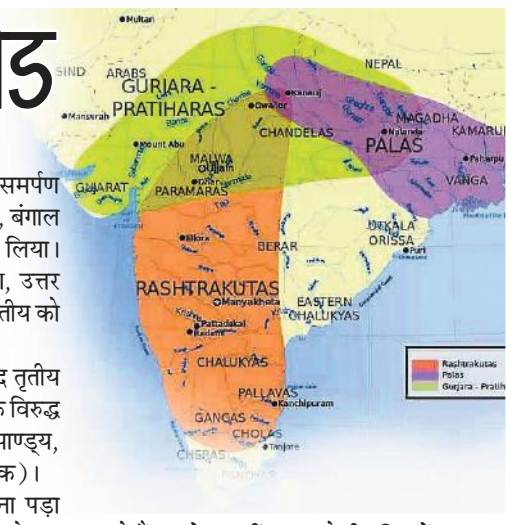


सकते हैं, पर ऐसा नहीं था। भले ही प्रतिहारों का मुख्य धर्म ब्राह्मण-हिन्दू, राष्ट्रकूटों का जैन और पालों का बौद्ध धर्म था, पर ये तीनों अन्य धर्मों को भी मानते थे और उनके मंदिर व मूर्तियां स्थापित कर पूजा भी करते थे। राष्ट्रकूटों ने तो अरबों के साथ व्यापारिक रिश्तों में उन्हें मस्जिद बनवाने की भी आज्ञा दे दी थी।

राष्ट्रकूटों ने उत्तर भारत में जो अपार सफलता पाई अगर उसे स्थायी कर पाते तो दक्षिण के शासकों की केंद्रीय स्थिति बन जाती। भारतीय उपमहाद्वीप में पर ऐसा न हुआ और न ही ऐसी सफलता दक्षिण के किसी और शासकों को फिर कभी मिली।

महान साम्राज्यवादी चोलों के पास मौका जरूर था, पर वे बंगाल के किनारे की गंगा को छूकर ही समुद्रतट होते हुए वापस चले गए। एक फर्जी 'गंगईकोड' (गंगा तक जितने वाला) की उपाधि लेकर, क्योंकि असली 'गंगईकोड' तो राष्ट्रकूट थे।

## इतिहास के झरोखे से

## पंचाल राज्य का गौरवशाली इतिहास

प्रो. गिरिराज नन्दन
इतिहासकार, आंवला, बरेली

### बदायूं (इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति)

#### महमूद गजनबी के आक्रमण के समय में बदायूं

महमूद गजनबी ने जब कन्नौज पर आक्रमण किया तब यहां का राजा चन्द्र पाल था। उसने उपहार भेजकर महमूद से मित्रता स्थापित कर ली। युद्ध नहीं हुआ, लेकिन मित्रता स्थाई नहीं रह सकी। शीघ्र ही सन् 1028 ई. में महमूद गजनवी के भांजे सय्यद मसूद सालार गाजी ने बदायूं पर आक्रमण कर दिया, जिसमें चन्द्रपाल मारा गया। इसके बाद का बदायूं का वर्णन उपलब्ध नहीं है। धीरे-धीरे यहां अहीर, गूजर एवं गड़रिया आदि जातियां बस गईं। इन सभी की सहमति के बाद कन्नौज के राजा के वंशज राजा जयदेव को 1190 विक्रमी सन् 1133 ई. में बदायूं का राजा बनाया गया, जो कि जयपाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके समय में यहां के मंदिरों तथा किले की मरम्मत कराई गई। उसी के समय में यहां का नाम वेदामऊ से बदाऊं प्रसिद्ध हुआ।

#### राजा अजय पाल

जयपाल के बाद अजय पाल गद्दी पर बैठा। उसने इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) पर आक्रमण किया तथा वहां के राजा अनंगपाल को परास्त कर अपने अधीन कर लिया तथा इंद्रप्रस्थ का राज्य उसी को दे दिया। अजयपाल के काल में भी बदायूं के किले का जीर्णोद्धार कराया गया। इस समय किले के चार दरवाजे थे। पूर्व में मंडन द्वार, (अब मढ़ई दरवाजे के नाम से प्रसिद्ध है) उत्तर में भरतद्वार (भरतौल दरवाजा), दक्षिण में सोतद्वार तथा पश्चिम का द्वार बंद करवा दिया गया था। वह बहुत प्रतापी राजा था। उसने किले के पश्चिम में हर मंदिर का निर्माण भी कराया, जिसमें नीले रंग (नीलकंड महादेव) के शिव भगवान की मूर्ति स्थापित की गई थी।

#### राजा महिपाल (द्वितीय)

सन् 1177 में यहां का राजा महिपाल द्वितीय हुआ, उसकी रानी चन्द्रवलि महोवा (हम्मीरपुर) के राजा की पुत्री थी। वीर रस के लोक प्रिय कवि मुंशी कल्यान राय ने अपने काव्य-कल्यान तरंग (आल्हखंड) में इनके विवाह का खूब बढ़ाकर वर्णन किया है। यह रानी बहुत रूपवती थीं। इसके रूप तथा बुद्धिमानी की कहानियां बहुत प्रसिद्ध हैं। राजा महिपाल ने अपनी रानी के नाम पर चन्द्र सरोवर (चन्द्रोसर) बनवाया तथा किले के चारों ओर चौकियां बनवाईं।

ऐसा कहा जाता है कि उसके समय में बदायूं में अत्यंत समृद्धि थी। यहां घी, दूध की नदियां बहती थीं। प्रातः काल शहर में चारों तरफ मट्ठा, मक्खन निकालने के लिए रइयों के चलने की आवाज आया करती थी। राजा अष्ठ कोना मंदिर पर स्नान किया करता था तथा वहीं उसका पूजा पाठ का स्थान था। वर्तमान में इस स्थान पर पंजाबी टोला है।

#### कुतुबुद्दीन ऐबक का अधिकार

राजा महिपाल द्वितीय के पश्चात उसका बेटा बदायूं का राजा बना। वह एक अयोग्य एवं विवलासी शासक था। उसके समय में 1196 ई. में दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद गौरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने बदायूं, पर आक्रमण किया, जिसमें यहां का राजा धर्मपाल हार गया तथा मारा गया। समस्त राज्य पर मुसलमानों का अधिकार हो गया। यह समस्त क्षेत्र इस समय कठेर कहलाता था। इसको जीतने के बाद बदायूं को सूबा बनाया गया। यहां एक सूबेदार नियुक्त किया गया, जिसकी सहायता के लिए नाजिम तथा मुंसिफ नियुक्त किए गए। यहां एक मस्जिद का निर्माण कराया गया। यह जामा मस्जिद अव्वल कहलाती है, जो कि शेख पट्टी में अब भी मौजूद है। यहां का पहला गवर्नर सिपहसालार हजबरउद्दीन हसन अरनव हुआ।

#### दिल्ली के सुल्तानों के अधीन

इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद था और यहां का तीसरा सूबेदार बनाया गया। उसने सन् 1209 ई. में मस्जिद ईदगाह शम्सी का निर्माण कराया। जब रुकुनउद्दीन फीरोज दिल्ली की गद्दी पर बैठा तब उसके समय में बदायूं में बड़ी मस्जिद का निर्माण कराया गया। यह मस्जिद शम्सी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध है। इस समय यहां का सूबेदार एजुउद्दीन मोहम्मद सादारी था। इसके बाद बदायूं के सूबेदार ताजुद्दीन संजर, मलिक जलालुउद्दीन तथा सन् 1251 ई. में एजउद्दीन बलवन बने। तीन वर्ष पश्चात दिल्ली के बादशाह ने बदायूं की यात्रा की। बलबन के काल में यहां के कठेरिया राजपूतों ने विद्रोह किया, जिसे दबाने के लिए सेना लेकर स्वयं बलबन ने कठेर पर आक्रमण किया। इसके बाद सुल्तान जलालुद्दीन के समय यहां का सूबेदार अलाउद्दीन था।

अलाउद्दीन के दिल्ली का सुल्तान बनने के बाद यहां पर मुगल अलीबेग गुरगाव ने आक्रमण किया, लेकिन मलिक काफूर ने शीघ्र ही उसको यहां से बाहर निकाल दिया। फीरोज शाह तुगलक के सिंहासन पर बैठने के बाद यहां का सूबेदार सैय्यद महमूद को नियुक्त किया गया। उसके समय में कठेरिया राजा खड्ग सिंह ने विद्रोह कर दिया तथा सैय्यद महमूद को मार दिया। सुल्तान फिरोज शाह विद्रोह दबाने को स्वयं यहां आया और छः वर्ष तक निरंतर यहां आकर आक्रमण करता रहा। उसने व्योली में एक किला बनवाया, जो इसके समय का आखरी किला था। उस स्थान नाम आखरीपुर प्रचलित हुआ। इस जमाने में बदायूं के किले में हाजी लतीफ ने पक्का हौज तथा मस्जिद निर्मित कराई।

# थाईलैंड का ब्लू टेंपल

बहुत ही कम लोग इंडिया से थाईलैंड जाकर चियांग मई और चियांग राइ वाले जगह में जाते हैं। यहां समुद्र तो नहीं है, लेकिन यहां पहाड़ हैं, जंगल हैं, नजदीक में ही थाईलैंड की सबसे ऊंची चोटी हैं। यहां बहुत ही खूबसूरत रंग-बिरंगे बुद्धिस्थ मंदिर हैं। कुछ हिन्दू मंदिर भी है या बोद्धिष्ट मंदिर में ही हिन्दू धर्म के देवी-देवता भी स्थापित हैं।

चियांग राइ में दो मंदिर काफी प्रसिद्ध हैं। एक तो ब्लू टेंपल और एक व्हाइट टेंपल। व्हाइट टेंपल के पास ही एक गोल्डन टेंपल भी बना हुआ है, जो पूरा गणेश जी को समर्पित है।

ब्लू टेंपल को थाई में वाट रोंग सुआ टेन बोलते हैं। वाट का मतलब मठ/मंदिर। जैसा कि नाम से जाहिर है यह मंदिर एकदम नीले रंग का हैं और फोटोजेनिक हैं। सोशल मीडिया पर इसकी सैकड़ों रील्स आपको मिल जाएगी। यह मंदिर हाल ही में बनाया गया है और 2016 में पूर्ण हुआ था। अभी भी छोटा-मोटा काम तो चलता दिखाई दे ही रहा था। इसको स्थानीय कलाकार फुत्था काबका ने डिजाइन किया था, जो व्हाइट टेंपल के निर्माण में भी शामिल थे। मंदिर में गहरे नीले रंग का मतलब बुद्ध की दिव्यता और ज्ञान है।

ऋषभ भरावा
लेखक

चियांग मई से चियांग राइ के लिए खूब सारे डे-पैकेज मिल जाते हैं। ऐसा ही एक डे पैकेज हमने लिया था, जिसमें एक बड़ी लग्जरी गाड़ी में हम 12 लोग थे, उसमें हम दो ही इंडियंस थे। इस पैकेज में व्हाइट टेंपल, ब्लू टेंपल, लॉन्ग नेक विलेज, हॉट स्प्रिंगस, ब्लेक हाउस जैसी चीजें मुख्य आकर्षण थीं। जैसे ही हम इस मंदिर के प्रांगण में पहुंचे, इसकी खूबसूरती देखकर सब जल्दी से जल्दी गाड़ी से उतरना चाह रहे थे। मंदिर के मुख्य भवन के अंदर और बाहर की दीवारें बारीकी से की गई पेंटिंग और सुनहरी नक्काशी से सजी थीं।

प्रवेश द्वार के दोनों ओर विशालकाय नागों (सर्प देवता) की मूर्तियां

हैं और मंदिर के बाहर ही एक तरफ एक विशाल बुद्धा की प्रतिमा बनी हैं। जब हमने अंदर प्रवेश किया तो मंदिर की दीवारें अंदर से भी नीले रंग की ही थी केवल एक चीज सफेद थी, वह थी 65 फीट विशाल ध्यानमग्न बुद्ध प्रतिमा। यहां मंदिर की छत और दीवारों पर बुद्ध की जीवन यात्रा और उनके उपदेशों को दर्शाने वाले सुंदर भित्तिचित्र बनाए गए हैं। लोग यहां घंटों तक बैठकर ध्यान भी करते हैं।

मंदिर के आसपास के क्षेत्र में भी कई छोटी-बड़ी प्रतिमाएं, मठ, स्तूप बने हुए हैं। गरुड़देव की भी प्रतिमाए यहां चारों तरफ लगी हैं। जानकारी के लिए बता दूं कि गरुड़ थाईलैंड का नेशनल चिन्ह है। इस मंदिर में प्रवेश निःशुल्क है। यही से थोड़ा आगे एक भवन के बाहर शिव परिवार की एक विशाल प्रतिमा मैंने गाड़ी में बैठे हुए ही देखी थी। यह मंदिर चियांग राइ से करीब 4-5 किमी दूर है। यहां आने के लिए आप सीधा चियांग मई की फ्लाइट लें, जो कि बैंकॉक से काफी सस्ती मिल जाती है और फिर दो दिनों में यहां के ऐसे सभी मंदिर, स्तूप और मठ को देखें। इसमें प्रवेश का कोई टिकट भी नहीं है।

# बाव हो तो सुंदरबाव

बात 17 वीं शताब्दी की है। उदयपुर ने जान लिया था कि नदियों में कल कल है तभी कल है। कुओं में पानी तभी प्राणी। सरोवर यदि सरस तो ही बुझेगी तरस। वापी में वारि, तभी नर और नारी। महारानी जनादे ने पुत्र राणा राजसिंह से कह दिया था कि रण में तलवार के वार से ज्यादा घातक होता है राज्य में पानी का अभाव और सबसे बड़ा दान है जल दान। बाकी दान विप्रो के, जलदान सभी को। बस्ती - बस्ती जल सुविधा के लिए नए कुएं खुदे, पंथ - पंथ बावड़ियां बने और मगरों की मोहरी में सरोवर। नदियां अपने बहाव के रस्ते में बंधने की गली रखती ही है।

डॉ.श्रीकृष्ण "जुगनू"
लेखक



राजसिंह ने मां का मान रखा और उनके नाम पर जनासागर बनवाकर उसके उत्सर्ग अवसर पर आजीवन जलाशय बनवाने का संकल्प किया तो कोई पीछे नहीं रहा। मेवाड़ में गांव-गांव चौधरी, पटेल ही क्या ग्रामीणों ने भी नवीन जलस्रोत बनाने की प्रतिस्पर्धा रची। नारियां कहां पीछे थीं? नववधू तो गांव में पांव रखते ही पहले मिट्टी की टोकरी उठाती और अपने व्रत को तभी पूरा हुआ मानती जबकि उसके मनोरथ का जलस्रोत बन जाता।

रानियों और उनके साथ अंतःपुर में रहने वाली खवाषणों, बारातनों ने भी अपनी हाथखर्ची की कोथलियां, नौलियां ढीली की। फतेहचंद ने बेड़वास, रामरसदे ने देबारी ने तीन मुखी बावड़ी बनवाई तो वीरपुरी रानी ने पलाना में बावड़ी। जोधपुरी चारु ने सनवाड़ की बावड़ी रचकर उसका उद्यापन किया तो उनकी सहयोगी सुंदरबाई ने पहाड़ा में एकमुखी, लेकिन बड़मुखी बावड़ी बनवाई। लालीबाई ने बाव बनाकर लाली लगाई।

सुंदरबाई ने अपने बेटों से कह दिया था कोई संतान नाम नहीं रखती। जस तो रस से। रस यानी पानी। यश के लिए जलस्रोत से बड़ा कोई नहीं। उसने देबारी से पहाड़ा और आहड़ के बीच जहां राणा ने उसको जमीन दी थी, उसी पर अपनी सारी बचत लगाकर बावड़ी बनवाई। सूत्रधार नाथुराम से उसने कह दिया था कि बावड़ी की चौकड़ी ही चार अर्थ देने वाली होती है। वह बावड़ी ऐसी रचे कि रानियां भी आकर जलपान करें। सखियां गोठ करें तो ठिकाना सुंदरबाव। कोई बरात रुके या ब्याईजी समेला करना चाहे तो सुंदरबाव!

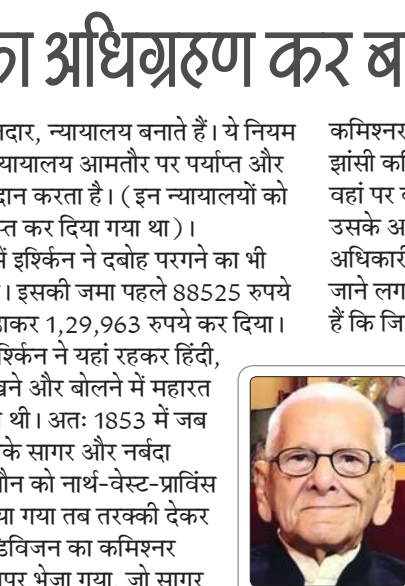

नाथूराम सुंदरबाई के भाव जानता था। वह गौड़ था। उसने जसमादे की दुहाई देकर ओड़ों को बुलाया। उनकी एक बड़ी बिरादरी पहले ही मेवाड़ में गर्धों के लगदड़ से मिट्टी डालने के काम कर रही थी। सुंदरबाई की बावड़ी का काम दिन की बजाय शाम को चलने लगा। "सुबह-हवेर राज की तो सांझ सुंदर की" जैसे मुहावरे के बीच पूरब-पश्चिम डाक-वेल बांधकर खुदाई चालू की और धरण से निकली भरण ने खेत को भरा।

आगरिया के पत्थर आए, भाटोली से भाटा, केली-विनोता के कातरे। दस-दस कारीगर कतार में पत्थर गढ़ने बैठे। हाथ प्रमाण, ताल प्रमाण और अंगुल प्रमाण से टांकियां और छैनियां एक टक-एक टक चलने लगी और सात महीने में जाकर आयताकार बावड़ी का स्वरूप सामने आया। सुंदरबाई के भाग्य से हेजा-हरवा ने जो सीर बताई, वैसी ही जलशिरा मिली और जब फूटी तो पूरबी कुआं पानी से पूर्ण हुआ। वह कभी नहीं सूखी।

सीर सुंदर, जल स्वादिष्ट। उजले पत्थर स्फटिक जैसे। सोपान की संयोजक भित्तियां के बीच-बीच देव प्रकोष्ठ (आले) बनाकर देवताओं को मेहमान किया गया। सबकी प्रतिष्ठा रखी गई। सुंदरबाई की बावड़ी बड़ी सुंदर बनी। गोरा सहित शिव पधारे तो नाम दिया सुंदरेश्वर। गणेश आए तो सुंदर गण, स्कंद आए सुंदर कार्तिकेय। प्रतिष्ठा के लिए तंबू लगे तो किसी का लौटने का मन ही नहीं हुआ। बस्ती बसी तो सुंदरबास! (जल और भारतीय संस्कृति) यह मेवाड़ की सबसे सुंदर बावड़ी है, लेकिन पहचान किसे? इसका पानी दो-दो विश्वविद्यालय पीते आए हैं। दस-दस कुलपति आए और गए। किसने बावड़ी को देखा? उल्टे खतरा मानकर उसे बंद ही करवा दिया। जबकि यह चंद हजार में यह कई लख्खा सिद्ध हो सकती है। बस एक मेवाड़ी पार्टी और रहट लगा दिया जाए और जलोत्थान की देशी विधि देखने का आकर्षक जगाया जाए तो एक बावड़ी पानी से ज्यादा पैसा दे सकती है, लेकिन यह कौन और कब करेगा?

# जब अंग्रेजों ने जलौन स्टेट का अधिग्रहण कर बनाया जिला

सुपरिटेंडेंट खुद सदर अमीन के फैसले के खिलाफ अपील की सुनवाई करता। उसके पास वे सब केस सुने जाते, जो पांच हजार से ऊपर के होते। फौजदारी के मुकदमे में इर्शिकन के पास मजिस्ट्रेट की पूरी पावर थी। वे सब मुकदमे, जिसमें सजा एक वर्ष से ज्यादा की होती उनकी अदालत में ही शुरू में पेश होते तथा इनके फैसले के खिलाफ अपील झांसी में तैनात एजेंट टू गवर्नर जनरल फॉर बुंदेलखंड के यहां होती। जिले की पुलिस भी इर्शिकन की मातहती में थी, क्योंकि जिले में अभी पुलिस सुपरिटेंडेंट का पद सर्जित नहीं किया गया था। पुलिस और क्रिमनल रूल अभी वही लागू थे, जिनको बांदा में तैनात गवर्नर जनरल के एजेंट मि. फ्रेशर ने बनाए थे, जिनमें थोड़ा फेरबदल कर्नल स्लीमन ने किया था।

पेरगुन्नाह न्यायालय एक शानदार ढंग से गठित न्यायालय है और इसका गठन इस प्रकार किया गया है। 600 रुपये से कम के दावे पर पेरगुन्नाह के तहसीलदार को एक याचिका दी जाती है। वादी को उसके द्वारा बारह मूल्यांकनकर्ताओं की सूची देने का निर्देश दिया जाता है। प्रतिवादी को बुलाया जाता है और ऐसी ही सूची के लिए कहा जाता है। यदि वह ऋण से इंकार करता है, तो प्रत्येक पक्ष दूसरे की सूची लेता है और उसमें से दस नाम काट देता है, दो सूचियों में शेष चार और अध्यक्ष के रूप में तहसीलदार, न्यायालय बनाते हैं। ये नियम सरल हैं और न्यायालय आमतौर पर पर्याप्त और सस्ता न्याय प्रदान करता है। (इन न्यायालयों को 1862 में समाप्त कर दिया गया था)।

वर्ष 1851 में इर्शिकन ने दबोह परगने का भी बंदोबस्त किया। इसकी जमा पहले 88525 रुपये थी, उसको बढ़ाकर 1,29,963 रुपये कर दिया। इतने वर्षों में इर्शिकन ने यहां रहकर हिंदी, उर्दू पढ़ने-लिखने और बोलने में महारत हासिल कर ली थी। अतः 1853 में जब हिंदी भाषी इलाके सागर और नर्बदा टेरिटरी व जालौन को नार्थ-वेस्ट-प्राविंस के आधीन किया गया तब तरक्की देकर इनको सागर डिविजन का कमिश्नर बना कर जबलपुर भेजा गया, जो सागर डिविजन का मुख्यालय था। साथ ही सेना में मेजर का पद भी दिया।



देवेन्द्र कुमार सिंह
इतिहासकार, जालौन

कैप्टन इर्शिकन के बाद वर्ष 1853 में कैप्टन स्किने की नियुक्त जालौन में हुई। इनका पद भी असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट का था। इनको कोई बंदोबस्त नहीं करना पड़ा, क्योंकि पिछला बंदोबस्त पांच साला था, जो जमा जनता से लेनी थी, उसी की वसूली नहीं हो पा रही थी। 1855 में यहां से जाने से पहले 20 उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा- यह एक स्वीकार्य तथ्य है कि वर्तमान मूल्यांकन अधिकांश जमीदारों पर बहुत अधिक दबाव डालता है।

1855 में मि.डब्ल्यू. बालमैन की जिले में नियुक्त हुई। इनके समय में ही जिले के असिस्टेंट सुपरिटेंडेंट के पद नाम को बदलकर डिप्टी कमिश्नर किया गया, क्योंकि अब झांसी कमिश्नरी बन गई थी और वहां पर कमिश्नर की नियुक्त करके उसके आधीन आने वाले जिले के अधिकारी को डिप्टी कमिश्नर कहा जाने लगा। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि जिले के पहले डिप्टी कमिश्नर मि. डब्ल्यू बालमैन थे। बालमैन ने भी स्किने की ही बात का समर्थन किया और 1855 में एक रिपोर्ट में लिखा-

इस तथ्य के समर्थन में कि सरकार बहुत कठोर मांग करती है, मैं निम्नलिखित अवलोकन प्रस्तुत करना चाहूंगा- जमीदारों की अत्यंत शर्मनाक स्थिति, जो लगभग सार्वभौमिक रूप से कर्ज में हैं और जब बैंकर सहायता से इंकार कर देते हैं, तो वे अपनी जमीन के लिए बीज-अनाज भी प्रदान करने में असमर्थ होते हैं, मवेशियों को छोड़कर वे शायद ही कभी व्यक्तिगत संपत्ति देते हैं।

बालमैन जिले में बहुत कम समय ही रहे पाए थे। 1856 में उनका ट्रांसफर यहां से हो गया और उनकी जगह पर जी.एच.फ्रीलिंग आए। ये भी यहां पर ज्यादा समय नहीं रहे। 1857 में उनका भी ट्रांसफर हो गया और उनकी जगह पर कैप्टन ब्राउन डिप्टी कमिश्नर होकर जिले में आए। इनको चार्ज लिए हुए थोड़ा ही समय हुआ था कि भारतवर्ष में 1857 की क्रांति हो गई। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से जालौन जिला भी अछूता नहीं रहा। जून ,1857 में यहां पर भी स्वतंत्रता संग्राम शुरू हो गया, जिसको अनेक इतिहासकारों ने गदर कहा है। मैंने पहले कहा है कि जालौन स्टेट का अधिग्रहण अंग्रेजों ने किया वही जिला बनने को उचित था। संक्षेप में इसको समझते हैं कि जालौन का किस प्रकार से एक जिले का रूप में गठन हुआ।

वर्ष 1838 से 1853 तक जालौन का पुरा क्षेत्र गवर्नर जनरल के पॉलिटिकल एजेंट और कमांडर इन चीफ के आधीन सुपरिटेंडेंट की देखरेख में शासित होता था। वर्ष 1853 में झांसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु होने पर झांसी जिला बना और सुप्रीम टेंडेंसी भी बनी, जिसमें तीन जिले झांसी, चंदेरी (ललितपुर) और जालौन रखे गए। प्रत्येक जिले में एक डिप्टी सुपरिटेंडेंट रखा गया, जो झांसी के सुपरिटेंडेंट के मातहत था। 1853 में परगना कालपी और कोंच को जालौन जिले में मिलाकर बदले में महोबा और जैतपुर को हमीरपुर को दे दिया गया। वर्ष 1854-56 के मध्य गरौठा, भांडेर, मोठ और तालुका चिरगांव को जालौन से निकाल कर झांसी जिले में शामिल किया गया।